नवदुर्गा पूजा



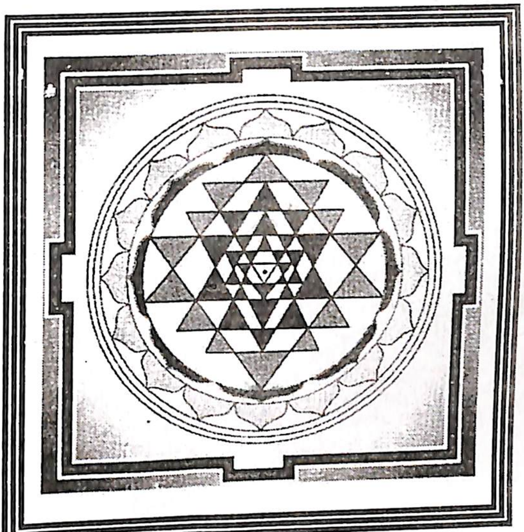
अर्धरात्री महाराज्ञा सेवा संस्था ट्रस्ट (रजि०)
भवानी नगर, जानीपुरा, जम्मू।



नवदुर्गा भगवती

नवदुर्गा पूजा

(काश्मीर शाक्त विमर्श)



समर्पण

स्व० पं० गौपीनाथ जी पण्डिता, क्षीर भवानी के र्स्व प्रथम पुजारी, जिन्होंने मुझे इस विद्या का धान दिया तथा श्री अर्जुन देव वेषण क्षीर भवानी जम्मू के प्रथम प्रधान, जिन्होंने मुझ पर विश्वास किया, को सादर समर्पित ।

लीलाधर कौल

अर्धरात्री महाराज्ञा सेवा संस्था ट्रस्ट (रजि०)
भवानी नगर, जानीपुरा, जम्मू।
दूरभाषः 191—2536300

पुस्तक मिलने का पताः—
अर्धरात्री महाराज्ञा सेवा संस्था ट्रस्ट (रजि०)
भवानी नगर, जानीपुरा, जम्मू।

प्रथम संस्करण :— 2015

संकलण : लीलाधर कौल

मूल्य :

मुद्रक : दुर्गा प्रिन्टिंग प्रेस, ओल्ड जानीपुर, जम्मू -180007
दूरभाष : 94197-95380, 9419141425

निवेदन

जो आद्य–शक्ति समस्त प्राणियों में सर्वरूप से विद्यमान है, जो सृष्टि की उत्पत्ति, पालन तथा अन्त का मूल कारण है उस महामाया भगवती दुर्गा को मैं प्रणाम करता हूँ।

माता दुर्गा–भगवती की पूजा, आराधना से, आद्यकाल से ही देवताओं तथा असरों को अपने अभीष्ट की प्राप्ति होती रही है। शक्ति की उपासना करने वाले उत्तमगति को प्राप्त करते हैं। शक्ति साधकों के लिए भोग तथा मोक्ष दोनों एक साथ सुलभ हैं।

नवरात्र का पर्व प्रतिवर्ष मुख्यता दो बार चैत्र तथा आश्विन मास में शुक्लपक्ष प्रतिपदा से नवमी तक मनाया जाता है और इन दिनों में दुर्गा भगवती की पूजा, अर्चण तथा आराधना करने से समपूर्ण कामनाओं की प्राप्ति हो जाती है।

जम्मू–काश्मीर प्रदेश के काश्मीर प्राँत में माता महाराज्ञा का पीठ, जो सब देवों का शक्ति समूह है, तुलामुला गावों में प्राचीन समय से स्थित है। काश्मीरी पण्डितों के काश्मीर से निशकासन के पश्चात् देवी माँ के पीठ का निर्माण माता भवानी के अपार अनुग्रह से जम्मू,

जानीपुर में किस प्रकार भक्तजनों द्वारा करवाया गया उसका उल्लेख करना यहाँ मैं आवश्यक नहीं समझता, परन्तु नवरात्रों में नवदुर्गा भगवती का अनुष्ठान करके, नव दिन तक उसकी विदिवद् पूजा 1995 ई० से इस पीठ पर आरम्भ कर दी गई, यह बताना उचित है।

श्री अर्जुन देव वेशन जो उस समय ट्रस्ट के प्रधान थे, उन के दृढ़ संकल्प तथा उनके साथ कुछ सेवा–कारों और भक्तजनों के कारण कार्यक्रम आरम्भ हुआ।

आरम्भ में श्री गौपी नाथ पण्डित जो क्षीर भवानी काश्मीर पीठ के पुजारी रह चुके थे और वहाँ किसी स्वामी जी के निरीक्षण में यह कार्यक्रम करते आये थे, ने ही यहाँ भी नवरात्र पूजा, अर्चणा का कार्यभार सम्भाला। उनके देहांत के पश्चात् स्व० श्री मक्खन लाल जी खरू कुछ साल तक यह कार्यक्रम चलाते रहे और उसके बाद से अब माता रानी की असीम अनुकमपा से यह अनुग्रह मुझ पर हुआ है और आशा करता हूँ कि आजीवन निरन्तर निभाता रहूँगा।

जैसे मैंने लिखा है कि श्री वेशन जी के निश्च्य से कार्यक्रम आरम्भ हुआ पर भक्तजन इस के आयोजन में धीरे–धीरे जुडते गए और अब नवरात्रों में पूजा, अर्चण हवन तथा अष्टमी– नवमी को चण्डी–महा यज्ञ एक जनता का कार्यक्रम बनकर संस्था के सामान्य कार्यक्रमों का एक विशेष अंग बन गया है।

जो भक्तजन यहाँ के नवरात्रों के कार्यक्रम में सम्मिलत रहते हैं उनके अनुरोध पर इस पीठ पर नवरात्रों पर चली आ रही पूजा, अर्चणा की विद्धि को एक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, आशा है कि माता भवानी के प्रिय भक्तजन इस से लाभान्कित होंगे।

भक्तजन इस पुस्तक में त्रुटियों के लिए क्षमा करते हुए, मुझे अपने विचारों से अवगत करें ताकि अगले संस्करण में इस का ध्यान रखा जा सके।

सतीसर परिवार ने इस कार्य में मेरा मार्गदशर्ण किया मैं इन महान भक्तजनों का आभारी हूँ ।

माँ भगवती सब का कल्याण करें!

श्रावण शुक्ल आष्टमी 2015 वि०

लीलाधर कौल

प्रस्तावना

तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचार विघातिनीम्।
नमामि भव भीतो अहं संसारण: अवतारिणीम्।।

उन बुद्धि की परिधि से परे, दुराचार की वृत्तियों का नाश तथा संसार सागर से तारने वाली दुर्गा देवी को, इस संसार से डरा, में नमस्कार करता हूँ।

काश्मीर शाक्तमतानुसार शक्ति का स्फुरण आयामी है माता दुर्गा सृष्टि कारणी, स्थित कारणी व लय कारणी (there is always interchange of energies from potential to non-potential, static to non static and like) स्वरूपणी है इस कारण इनको महाकाली, महालक्ष्मी व महा सरस्वती के नामों से भी पूजा की जाती है। इस अवस्था में माता बीजात्मक रूप में अति दुगर्म अवस्था में महाकाली तद् पश्चात् पोषन देने वाली महालक्ष्मी व अन्त में प्रस्फूटित होने वाली महा सरस्वती देवी है। यही देवियाँ फिर से तीन–तीन के क्रम में विभाजित होकर तीन आयामों में प्रकट होकर (3x3 = 9) नव दुर्गा कहलाती हैं। तातपर्य कि इस विधित संसार का पर्दाथ समूह/जीव समूह, निरन्तर सृष्टि, स्थिति व लय प्राप्त करता रहता है और इन सब कार्यों की अधिष्ठात्री देवियां क्रमश: प्रथम शैलपुत्री, द्वतीया ब्रह्मचारिणी, त्रितया चण्डघण्टा, चतोर्थी कुष्माण्डयी, पन्चमी स्कन्दमाता, शष्टी कात्यायन्यी, सप्तमी कालरात्री,

अष्टमी महागौरी, नौमी सिद्धिदात्री है।

यह नवदुर्गा का पूजन इन्हीं शक्तियों की पूजा है, कश्मीर की परंपरागत दुर्गा पूजा को वैदिक स्वरूप में भक्तजनों के समक्ष प्रस्तुत करने का दुगर्म कार्य साधना संयुक्त व भक्ति से ओतप्रोत श्री एल.डी. कौल जी ने पूर्ण रूप से सनपन्न किया है। यह उनके साधुवाद का प्रकारण है।

ऐसा दुगर्म कार्य केवल माँ दुर्गा के विशेष अनुग्रह से ही सफल हुआ है।

जानात्येका परा कान्तं सर्व दुगा सदात्मिका ।

या परा परमा शक्तिः महा विष्णु स्वरूपणी।।

हम जैसे सामान्य जन इस अनुग्रह वृष्टि का आनंद इस दुर्गा पूजा विधि से प्राप्त कर पायेंगे ऐसा हमारा मानना है।

पंच पूजा के रूप में इस पुस्तक में ''बीजारोपण'' का, घट स्थापन'' कलश स्थापन, कुमारी पूजा व भोग निवेदन आदि सभी क्रियाँयें अति भक्ति व सरल रूप में की गई हैं।

हमारा पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक नव दुर्गा पूजा को सरल रूप में प्रस्तुत करने के कारण भक्त सम्प्रदाय के हृदय में स्थिति रहेगी।

धन्यवाद!

सतीसर परिवार

नवदुर्गा पूजा में नवदिन तक नव देवियों के नाम इस प्रकार हैं :– शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रधन्टा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धदात्री।

अतः प्रतिदिन की अधिष्ठात्री देवी का नाम आहवाहन, उपचार में लेना अनिवार्य है। जैसे पहले दिन शैलपुत्री, दूसरे दिन ब्रह्मचारिणी ..... इति ।

यह सभी देवियाँ नौ दिनों में विकसित होकर अष्टादश बुजी जगद्म्बा का रूप प्राप्त करेंगी।

नव दिनों की भोग विधि

प्रथम दिवस	–	धृत, (घी) द्वतीय दिवस – शक्कर
तृतीय दिवस	–	दुग्ध, (दूध) चतुर्थी – पुआ
पंचमी	–	केला, षेष्टी – मधु
सप्तमी	–	गुड, अष्टमी – नारियल
नवमी	–	लावा ।

कलश की पूजा प्रथम दिन की जाए, शेष दिनों में देवी पूजा के साथ ही कलश का पंच उपचार अतः पाद्य, अर्ध्य, तिलक, अर्घ पुष्प तथा आर्ती भी करें।

नवदुर्गा पूजा सामग्री (नव दिन पूजा के लिए)

1. गाय का गोबर (मण्डप आदि लेपन हेतु)
2. पवित्र मिट्टी (लेपन तथा यव निक्षेप हेतु)
3. गंगा जल (मण्डप शुद्धि हेतु)
4. अखरौट 200
5. छींट लाल रंग – 2 मीटर कलश वस्त्र
6. खौबानी 500 ग्राम
7. किशमिश 500 ग्राम
8. नबात / मिश्री 1 कि०
9. बादाम गिरी 500 ग्राम
10. खौपा 1 कि०
11. काला तिल 2 कि०
12. सरशफ (पीली सरसो) 100 ग्राम
13. बेर 100 ग्राम
14. लाई (सफेद) 50 ग्राम
15. मधू (शहद) 100 ग्राम
16. सिन्दूर (हनूमान) 100 ग्राम
17. कुम्कुम 50 ग्राम
18. मौली 5 गौले

19. कपूर 1 पाकेट (बडा)
20. सेन्ट 1 बोतल (बडी)
21. इलाईची (सब्ज़) 10 ग्राम
22. काला मिर्च 50 गांम
23. लौंग 20 ग्राम
24. चन्दन भूरा सफेद 50 ग्राम
25. चन्दर भूरा लाल 100 ग्राम
26. आरी 3
27. गुगल 1 कि०
28. घी 2 कि०
29. दीपक मिट्टी का 1 बडा
30. टाकू मिट्टी के 3
31. फल (अन्नार, अंगूर, आदि) 1 कि० प्रतिदिन
32. फूल 1 कि० प्रति दिन
33. बेल पत्ते तथा ध्रुवा (ध्रमुन) 150 ग्राम प्रतिदिन
34. पान पत्ता 1 प्रति दिन
35. दूध 1 कि०
36. दही 500 ग्राम
37. सुपारी 20
38. रूई 50 ग्राम
39. धूप / अगरबत्ती 9

40. माचस (होमलॉटि) 1 बडी

41. चावल 1 कि० – 500 ग्राम (प्रति दिन)

42. नमक जंग के लिए (प्रति दिन)

43. जेन्यू (यज्ञो पवीतं) 10 न०

44. फूल मालाये 3 (प्रति दिन)

45. दर्ब (ध्रुवा) 500 ग्राम

46. जव दाना 1 कि०

47. शक्कर 500 ग्राम

48. काजू 500 ग्राम

49. केसर 5 ग्राम

50. अगर 50 ग्राम

51. थगर 50 ग्राम

52. शंख पुष्प 30 ग्राम

53. कुष्ठा (कौठ) 50 ग्राम

54. वचः (वैय) 50 ग्राम

55. श्रणगार–सामान प्रति दिन – 1 सैट

56. देवी के लिए वस्त्र प्रति दिन – 1

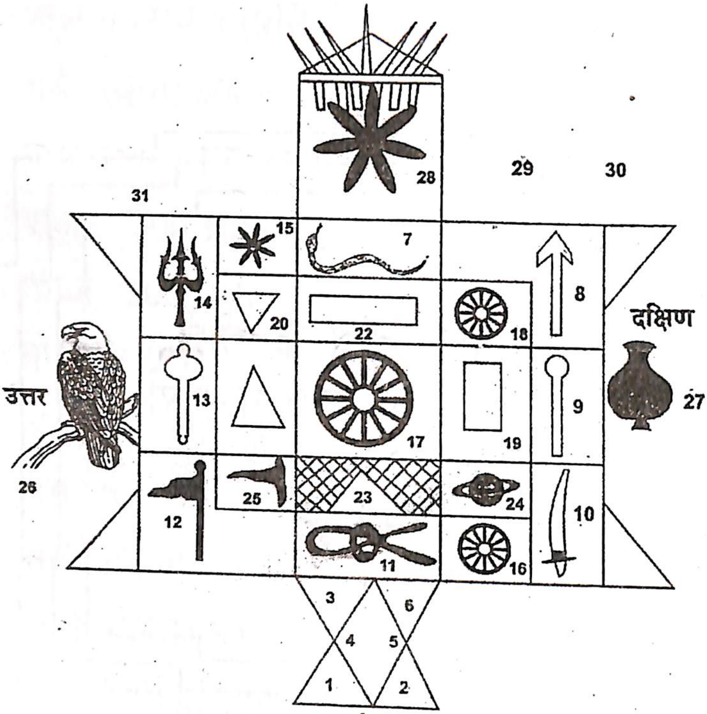
57. चूना (सफेद) 1 कि०

58. दुर्गा देव्यै सोनित – बीजारोपण
घट स्थापना 7 धान्य , सुपारी

अखण्ड द्वीप के नीचे
कुम्कुम, लालचन्दन–भूरा
एवं हनुमान–सिन्दूर से यह चक्र
बना लें

इन्द्र कलश

पूर्व



पश्चिम

नोटः–

1–16 स्थानों पर एक–एक अखरोट रखने चाहिए।

17–27 स्थानों पर दो–दो अखरोट रखने चाहिए।

28 पर अखरोटों से भरा हुआ कलश का गड्डा रखना चाहिए।

इन्द्र कलश में दिये गए अंको के स्थान पर इन देवताओं के स्थान

	अखरोट
1. श्री गणपति	
2. श्री कुमार	1
3. श्री श्री	1
4. श्री सरस्वती	1
5. श्री लक्ष्मी	1
6. श्री विश्व–कर्मा	1
7. श्री इन्द्राय वज्र हस्ताय	1
8. श्री अग्न्ये शक्ति हस्ताय	1
9. श्री यमाय दण्ड हस्ताय	1
10. श्री नैर्ऋतये खड्गहस्ताय	1
11. श्री वरुणाय पाश हस्ताय	1
12. श्री वावये ध्वजा हस्ताय	1
13. श्री कुबेराय गदा हस्ताय	1
14. श्री ईशानाय त्रिशूल हस्ताय	1
15. श्री ब्राह्मणे पद्म हस्ताय	1
16. श्री विष्णवे चक्र हस्ताय	1

	अखरोट
17. श्री अग्न्यादित्याभ्यां	2
18. श्री वरुण चन्द्रमोभ्यां	2
19. श्री कुमार भौमाभ्यां	2
20. विष्णु बुधाभ्यां	2
21. श्री इन्द्र बृहस्पतिभ्यां	2
22. श्री सरस्वती शुक्राभ्यां	2
23. श्री प्रजापति शनिश्चराभ्यां	2
24. श्री गणपति राहुभ्यां	2
25. श्री रुद्र केतुभ्यां	2
26. श्री ब्रह्म ध्रुवाभ्यां	2
27. श्री अनन्त अगस्ताभ्यां	2
28. अखरोटों और पानी से भरा कलश का बड़ा गड्ढा	



या कुन्देन्दुतषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीनावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।।
या ब्रह्माच्युतशंकर प्रभृतिभर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाडयापहा।।

अर्धरात्री महाराज्ञा सेवा संस्था ट्रस्ट (रजि०)
भवानी नगर, जानीपुरा, जम्मू।

संकलन : लीलाधर कौल

ॐ श्री महा गणेशाय नमः
श्री महा राज्ञी सदा भगवती भवतो प्रसन्नः
(पूजा से पहले)

पूजा के पूर्व दिन 12 बजे दिन के बाद एकबार ही नियमपूर्वक भोजन करना और पूजा के दिन प्रातः काल नित्य–क्रिया सम्पन्न करके, पवित्र होकर आसन पर बैठें।

पूजा का अनुष्ठान करने वाला भक्त पूरे नवरात्रों में उपवास रखकर वैष्णों धर्म का पालन करें अर्थात् काम, क्रोध, मोह, अहंकार तथा लोभ पर पूरा नियंत्रण रखे। यदपि इन दिनों ऐसी स्थितियों में फसंने के बहुत कारण उत्पन्न होंगे परन्तु भक्तजन इन्हें अपनी परीक्षा समझ कर इन को टालते रहें।

स्थलशुद्धिः– (जल लेकर सब दीवारों आदि पर छिड़के) और इन मन्त्रों को पढ़ें :

ॐ अपवित्र : पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

ॐ तत्सत। (जल छिडकना)

देवतामण्डपं चतुर्द्वारं विचिन्त्य ओं अंतरिरक्षोंऽ तरिता अरातयः हु फट् इति मंडपातः अक्षतान् क्षिप्तवा।।

अखण्ड दीप की स्थापनाः

यजमान पवित्र होकर अखण्ड दीप की स्थापना करें। भूमि पर शोधन कर फूल–अक्षत से "ॐ" दीपाधार शक्त्य नमः मन्त्र से पूजा करें।

लालचन्दन, कुंकम और सिन्दूर से भूमि पर श्रीचक्र पहले वर्ण का चित्र बना लें, (चित्र पुस्तक के शरू में दि गया है) उसके बीच में धातुनिर्मित या मिट्टी का बडा दी तेल/घी से जलाकर फूल–अक्षत लेकर दीप की पूजा करे

सुप्रकाशो महादीप्तः सर्वतस्तिमिरापहः।।
स बाह्याभ्यन्तरज्योतिदीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

एष दीपः सकलविघ्न निवृत्तिपूर्वक
कामनासिद्धये श्री दुर्गा प्रीत्यर्थं च अहमुत्सृज्ये।

भो दीप देव रूपस्त्व कर्मसाक्षीह्यविघ्नकृत।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्थात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

दीपक के उपर हाथ रखकर पढ़ें:

ओं पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।।
पुनन्तु सर्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

(इस हाथ से अपने शरीर का स्पर्श करें)

(अब अपने आसन पर बैठकर शान्ति पाठ करें)

शान्ति पाठः

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथवी
शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वैदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्वं
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधिः।।

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयंकुरु।
शन्न कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

इसके बाद कलश स्थापना करें

(केवल स्थापना)

ॐ श्री गणेशाय नमः

श्री महाराज्ञी सदा भगवती भवतो प्रसन्नः

कलश स्थापना पूजा

(दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करें, चावल और फूल कलश पर चढ़ाते हुए निम्न मन्त्र पढ़ें :–

ओम्कारो यस्य मूलं जठरच्छन्दविस्तीर्ण शाखा, ऋक्पत्र सामपुष्पं यजुरुचित फलः स्यादर्थवः प्रतिष्ठा। यज्ञच्छाय सुशीतो द्विजगण मधुपैः गीयते यस्य नित्यं, शक्तिः सन्ध्या त्रिकालं दुरितभयहरः पातु नो वेदवृक्षः। मुक्ताविद्रुम हेमनीलधवलच्छायैः मुखैस्त्रीक्षणैः युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकटा तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम। गायत्री वरदाभयाङ्कुशकरां शूलं कपालं गुणं शंखं चक्रमथारविन्द युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे। आयातु वरदा देवी त्रयक्षरा ब्रह्मावादिनी, गायत्रीच्छच्दसांमार्तब्रह्मयोने नमोस्तुते। भद्रम पश्येम प्रचरेम भद्रम भद्रम वदेम श्रृणुयाम भद्रम। तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम् अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः।।

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूर्यः। दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णो यत्परमं पदम्। ओम् गायत्र्यै नमः ओम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुः वरेण्यम भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।3।

क्षेत्रपालों को केवल अक्षत (अर्घ) चढ़ाना:–

द्रष्टे नम उप द्रष्ट्रे नमोऽनुद्रष्ट्रे नम, ख्यात्रे नम, उप ख्यात्रे

नमो, ऽनुख्यात्रे नमः, शृण्वते नम, उपशृण्वते नमः, सते नमोऽसते नमो, जाताय नमः, जानिष्यमाणाय नमो, भूताय नमो, भविष्यते नम श्चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमो मनसे नमो, वाचे नमो, ब्रह्मणे नमः, श्रान्ताय नमस्तपसे नमः जनिष्यमाणाय नमो मनसे नमो, पिता पुत्रः पौत्रो वषट्स्वाहा नमः, प्राणो व्यानोऽपानो वषट्स्वाहा नमो, भूर्भुवः स्ववषट्र स्वाहा नमः, ।। जनिष्यमाणाय नमो मनसे नमो, हेरकादिभ्यो नमः वटुकादिभ्यो नमः समस्त क्षेत्रपाल देवताभ्यो नमः।

(अब किसी पात्र में पानी, तिल, अक्षत, फूल, तिलक और विश्टुर रखें और इस प्रणीतपात्र को कलश के सामने रखकर इस में निम्न तीन मन्त्रों से तीन फूल डालें):–

1. संववः सृजामि ह्दयं संसृष्टं मनो अस्तु वः।
2. संसृष्टास्तन्वः ह्दयं संसृष्टं प्राणो अस्तु वः।
3. संय्या वः प्रियास्तन्वः संप्रिया ह्दयानि वः आत्मा वो अस्तु संप्रिया संप्रियास्तन्वो मम।।

अब इस पात्र के विष्टुर से इसी का जल कलश और क्षेत्रपालो पर छिडकते हुए निम्न मन्त्र पढ़ते रहें:–

अग्रेरायुरसि तस्य ते मनुष्या आयुष्कृतस्तेनास्मा अमुष्मा आयुर्धेहि।। इन्द्रस्य प्राणः स ते प्राणं ददातु यस्य प्राणस्तस्मै ते स्वाहा पितृणां प्राणस्ते ते प्राणं ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा।। विश्वेषां देवानां प्राणस्ते ते प्राणन्ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा।। प्रजापतेः परमेष्टिनः प्राणः तौ ते प्राणन्दत्तां यथोः प्राणस्ताभ्यां वां स्वाहा।।

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणान्दत्तां तेन जीव।

मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव।

बृहस्पतेः प्राण से ते प्राणन्दत्तां तेन जीव। गणपतिकलश मण्डल याग देवताभ्यः, भगवत्यै अमायै, कामायै, चार्वङ्गयै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिका भगवत्यै, श्रीशारदा भगवत्यै, श्रीमहाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै, वैखरी भगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गा भगवत्यै, यमुना भगवत्यै, कालिका भगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्मयै, महात्रिपुरसुन्द्रयै सहस्रनामन्यै, देव्यै भवान्यै, अभयंकारी देव्यै, क्षेमंकरी भगवत्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्राधिपतये, अमुक भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय, अग्नये शक्तिहस्ताय, यमाय दण्डहस्ताय, नैऋतये खड्गहस्तास, वरुणाय पाशहस्ताय, वायवे ध्वजाहस्ताय, कुवेराय गदाहस्ताय, इशानाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय, विष्णावे चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः, कुलनागदेवताभ्याः, अग्न्यादित्याभ्यां, वरूण चन्द्रमोभ्यां, कुमाराभौमाभ्यां, विष्णो–बुधाभ्यां, इन्द्रब्रहस्पतिभ्यां, सरस्वतीशुक्राभ्यां, प्रजापति शनैश्चराभ्यां, गणपत्रिाहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्तागस्त्याभ्यां, ब्रह्मणे कुमार्य, ध्रुवाय, अनन्ताय, हरये, लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः, पंच चत्वारिशद् वास्तोष्पति, यागदेवताभ्यः ब्रह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्योमातृभ्यः, ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वर देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिकादेवताभ्यः सिनीवालीदेवतभ्यः,

यामीदेवताभ्यः रौद्रीदेवताभ्याः, वारूर्ण देवताभ्यः, ब्रहस्पत्ये देवताभ्यः, ओम् भू देवताभ्यः, ओम् भुवो देवताभ्यः ओम् स्वर्देवताभ्यः ओम् भू भुवः स्वर्देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयाग देवताभ्यः धूर्म्यः उपधूभ्यः महागायत्र्यै सावित्र्य सरस्वत्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कुष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गा भगवत्यै सहस्रनाम्न्दै दुर्गादेव्यै भवान्यै। हेरकादिभ्यः वटुकादिभ्यः जीवादानम् परिकल्पयामि नमः।।

अब कलश मण्डप के दिशाओं मे जौ, तिल फेंकना:–

पूर्व दिशा में – ये देवाः पुरः सदोऽग्निनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।

दक्षिण दिशा में – ये देवाः दक्षिणात्सदो यमनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्याः स्वाहा। **पश्चिम दिशा में** – ये देवाः पश्चात्सदो मरुनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा। **उत्तर दिशा में** – ये देवा उत्तरात्सदो मित्रावरुणनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।

ऊपर आकाश को – ये देवा उपरिषदः सोमनेत्रा अवस्वदन्तो रक्षोहणस्ते नः पानतु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।

आग्नेय कोण में – इदमहं रक्षोभिः समूहाम्यग्ने संदह रक्षः संदग्धं रक्षोग्नये पुरः सदे रक्षोघ्ने स्वाहा।

नेत्रृत कोण में – यमाय दक्षिणात्सदे रक्षोघ्ने स्वाहा।

वायव्य कोण में – मरुदभ्याः पश्चात्सदभ्यो रक्षोहभ्यः स्वाहाः।

ईशान कोण में – मित्रावरुणाभ्यां उत्तरात् सदभ्यां स्वाहा।

नीचे धरती पर – सोमायोपरिषदेऽवस्वदते रक्षोघ्ने स्वाहा।

प्रणीतपात्र के विष्टुर से सब द्रव्यों की शुद्धि करना– पानी की छींटे छिडकना –

आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः उशतीरिव मातरः। तस्मा अरङ्ग माम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः।

कलश पर फूल चढ़ाना – वषट्ते विष्णवास आकृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम। वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदानः। महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्मयै, विश्वकर्मणे, द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये, ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः, दुर्गायै त्रयम्बकाय वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वात्तदिभ्यः, पितृगणदेवताभ्यः, भगवते वासुदेवाये सङ्ककर्षणाय प्रद्मुमनाय अनिरुद्धाय सत्याय–पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दायसहस्त्रनामने विष्णवे लक्षमीसहिताय नारायणाय। भवाय देवाय, शर्वायदेवाय, रुद्रायदेवाय, पशुपतयेदेवाय, उग्रायदेवाय, भीमायदेवाय, महादेवाय, ईशानायदेवाय, ईशवरायदेवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय, विनाकायकाय, एकदन्ताय, कृष्ण पिंगलाय, गजान्नाय, लम्बोदरायं भालचन्द्राय, हेरम्बाय, आखुरथाय, विंध्नेशाय, विघ्नभक्ष्याय, वल्लभासहिताय, श्रीमहाणेशाय क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय, मयूरवाहानाय सेनाधिपतये कुमाराय।

भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै, कामायै, चार्वङ्गयै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिका भगवत्यै, श्रीशारदा भगवत्यै, श्रीमहाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै, वैखरी भगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गा भगवत्यै, यमुना भगवत्यै, कालिका भगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्मयै, महात्रिपुरसुन्द्रयै सहस्नामन्यै, देव्यै भवान्यै, अभयंकारी देव्यै, क्षेमंकरी भगवत्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्राधिपतये, अमुक भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय, अग्नये शक्तिहस्ताय, यमाय दण्डहस्ताय, नैऋतये खड्गहस्तास, वरुणाय पाशहस्ताय, वायवे ध्वजाहस्ताय, कुवेराय गदाहस्ताय, इशानाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय, विष्णवे चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः, कुलनागदेवताभ्याः, अग्न्यादित्याभ्यां, वरूण चन्द्रमोभ्यां, कुमाराभौमाभ्यां, विष्णो–बुधाभ्यां, इन्द्रब्रहस्पतिभ्यां, सरस्वतीशुक्राभ्यां, प्रजापति शनैश्चराभ्यां, गणपत्त्रिाहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्तागस्त्याभ्यां, ब्रह्मणे कुमार्य, ध्रुवाय, अनन्ताय, हरये, लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः, पंच चत्वारिशद् वास्तोष्पति, यागदेवताभ्यः ब्रह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्योमातृभ्यः, ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वर देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिकादेवताभ्यः सिनीवालीदेवतभ्यः, यामीदेवताभ्यः

रौद्रदिवताभ्या:, वारूर्णोदेवताभ्य:, ब्रहस्पत्ये देवताभ्य:, ओम् भू देवतीय:, ओम् भुवो देवताभ्यः ओम् स्वर्देवताभ्यः ओम् भू भुवः स्वर्देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयाग देवताभ्यः धूर्म्यः उपधूभ्यः महागायत्र्यै सावित्र्य सरस्वत्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कुष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गा भगवत्यै सहस्रनाम्न्दै दुर्गादेव्यै भवान्यै।

हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्यः नमो नमः।

कलश के सामने तिल, चावल, दही और शक्कर मिलाकर नैवेद्य रखिए और उस पात्र को दोनों हाथों से सपर्श करें और पढ़ें:–

सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितु प्रसवेऽश्विनो बार्हूभ्यां पूष्णे हस्ताभ्यामादधे महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्ये लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देताभ्य:, प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णो महेश्वरदेवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपत्ये नारायणयायै दुर्गायै त्रयम्बगकायै, वारुणायै, यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्तदिभ्यः पितृगणयाग देवताभ्य:, भगवते अमायै, कामायै चार्वङ्गयै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिका भगवत्यै, श्रीशारदा भगवत्यै, श्रीमहाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै, वैखरी भगवत्यै, वित्स्ताभगवत्यै, गङ्गा भगवत्यै, यमुना भगवत्यै, कालिका भगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्मयै, महात्रिपुरसुन्द्रयै सहस्रनामन्यै, देव्यै भवान्यै, अभयंकारी देव्यै,

क्षेमंकरी भगवत्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्राधिपतये, अमुक भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय, अग्नये शक्तिहस्ताय, यमाय दण्डहस्ताय, नैऋतये खड्गहस्तास, वरुणाय पाशहस्ताय, वायवे ध्वजाहस्ताय, कुवेराय गदाहस्ताय, इशानाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय, विष्णवे चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः, कुलनागदेवताभ्याः, अग्न्यादित्याभ्यां, वरूण चन्द्रमोभ्यां, कुमाराभौमाभ्यां, विष्णो–बुधाभ्यां, इन्द्रब्रहस्पतिभ्यां, सरस्वतीशुक्राभ्यां, प्रजापति शनैश्चराभ्यां, गणपतिराहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्तागस्त्याभ्यां, ब्रह्मणे कुमार्य, ध्रुवाय, अनन्ताय, हरये, लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः, पंच चत्वारिशद् वास्तोष्पति, यागदेवताभ्यः ब्रह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्योमातृभ्यः, ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वर देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिकादेवताभ्यः सिनीवालीदेवतभ्यः, यामीदेवताभ्यः रौद्रदिवेताभ्याः, वारूर्णीदेवताभ्यः, ब्रहस्पत्ये देवताभ्यः, ओम् भू देवतीयः, ओम् भुवो देवताभ्यः ओम् स्वर्देवताभ्यः ओम् भू भुवः स्वर्देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयाग देवताभ्यः धूर्म्यः उपधूभ्यः महागायत्र्यै सावित्र्य सरस्वत्यै, शैलपुत्र्दै, ब्रह्मचारिण्यै, कुष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गा भगवत्यै सहस्रनाम्नै दुर्गादेव्यै भवान्यै। गणपतिकलश मण्डल देवताभ्यः समस्त क्षेत्रपाल देवताभ्यः तिल तण्डुलमात्रं दधि मधु मिश्रं ओम् नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः

कलश पर फिर से फूल चढ़ाना:–

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम। अर्चन्तस्त्वा हवामहे अर्चन्तः समिधीमहि! अग्नेरर्चत ऊतये अर्चतः प्रार्चतः प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णमर्चत अर्चत अर्चत। **यहाँ कलश स्थापना पूजा पूर्ण होती है।**

वेदी निर्माण

जिस पात्र में नवदुर्गा (यव) बीजनी हो उसका गाय के शुद्ध गोबर से लीपन करलें, फिर फूल–अक्षत से इसमें षट्दल कमल बनाकर उसके मध्यभाग का स्पर्श करते हुए पढ़ेः

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य
भुवनस्य धर्त्री पृथिवीं यच्छ पृथ्वीं दृह पृथिवीं मा हिंसीः।।

इस पर पवित्र स्थान की मिट्टी एवं बालू से उत्तर की ओर ढाल रखते हुए वेदी बनायें।

यव निक्षेप (जौ डालें)

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान।

देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेन पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।।

(इसके पश्चात कलश और दुर्गा पूजा आरम्भ)

कलश पूजा

पानी से संकल्प छोडना – ओम् अस्य श्री आसन शोधन मन्त्रस्य मेरुपृष्ट ऋषिः सुतलं च्छन्दः कूर्मो देवता आसन–शोधने विनियोगः।

धरती को नमस्कार करना–

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं करु चासनम।

धरती को आसन रखना (दो दर्भकाण्ड आसन रूप में देकर)–

ध्रुवाद्यौः ध्रुवा पृथिवी, ध्रुवासः पर्वता इमे।

ध्रुवं विश्वमिदं जगद्ध्रुवो राजा विशामसि।

गन्ध, अक्षत व फूल चड़ाना – प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभंनं गन्धोनमः। अर्घो नमः, पुष्पं नमः। **अब नमस्कार करें।**

शुक्लम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चर्तुभुजम प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नों पशान्तये।

अभिप्रेतार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैरपि सर्व विघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।।

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णो गुरुर्साक्षान्महेश्वरः गुरुर्–एव जगत् सर्वं तस्मै श्री गुरुवे नमः।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ततपदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ईषामन्दी वरश्यामो हृदयस्थो जनार्दन।

नमामि सत्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थ सिद्धये।

वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य सम प्रभु निर्वघ्नं
करुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।

महाबले महोत्साहे महाभय विनाशिनि त्रहि मां देवि
दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भय वर्धिनि।।

अचिन्तय रूप चरिते सर्व शुत्र विनाशिनि रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि।

सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्य–खिलेश्वरि एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम।

ओम् गुरुवे नमः, परम गुरुवे नमः परमेश्णि गुरुवे नमः, परमाचार्याय नमः, आदि सिद्धेभ्यो नमः। **अंगन्यास कीजिए–**
'अ' नाभो, **'उ'** हृदिये **'म'** शिरसि

ओम् 'भू'–अंगुष्ठाभ्यां नमः, **भवः**–तर्जनीभ्यां नमः, **'स्वः** मध्यामाम्या नमः, **'महा'** अनामिकाभ्यां नमः, **'जन'** कनिष्ठकाभ्यां नमः, **'तपः सत्यं'** करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।
भूः – पादयो, **भुवः** – जान्वोः, **स्वः** – गुह्ये, **महाः**– नाभौ, **जनः**– हृदिये, **तपः** – कण्ठे, **सत्यं** शिरसि, **ओम भूः** हृदयाय नमः, **भुवः** शिरसि स्वाहाः **स्वः** शिखाय वषट् **महः** कवचाय हूँ, **जनः** नेत्रभ्यां वौषट, **तपः सत्यं** – अस्त्राय फट।
'तत–सवितुर' अंगुष्ठाभ्यां नमः, **वरेण्यं** – तर्जनीभ्यां नमः,

भर्गो – देवस्य मध्यमाभ्यां नमः, **धीमहि** – अनामिकाभ्यां नमः, **धियो यो नः** – कनिष्ठकाभ्यां नमः, **प्रचोदयात्** करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः तत् पादयो, **सवितुर** जान्वो, **वेरण्यं** कट्यां, भर्गो **नाभौ**, देवस्य **हृदये**, धीमहि–**कण्ठे**, धियो–**नासिकायां**, **'यो'** – चक्षषो, **नः** ललाटे, **प्रचोदयात्** – शिरसि।

तत सवितुर हृदयाय नमः **वरेण्यं** शिरसे स्वाहाः, **भर्गोदेवस्य** शिखाय वौष्ट, **धीमहि** कवचाय हूँ, **धियोयोनः** नेत्राभ्यां वौष्ट्, **प्रयोदयात्** अस्त्राय फट, **आपः** स्तनयोः **ज्योति** नेत्रयो, **रसो** मुखे, **अमृतं** ललाटे, **ब्रह्म–भूर्भुवः स्वोरम्** शिरसि।

चारों ओर तिल फेंकते हुए पढ़े–

अपसर्पुन्त ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः, ये भूता विघ्न–कर्तारस्ते नशन्तु शिवाज्ञया।

प्राणायाम करके मुंह और पैरों को पानी की छींटे लगाते हुए पढ़ें– तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मानः शंसो अररुषो धूर्ति प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

पवित्र धारण करना – वसोः पवित्रमसि शत्धारं वसूनां पवित्रम्–असि, सहस्र–धारम् अयक्षमा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेन बहुला भवन्ती।

यजमान को तिलक लगाना – मन्त्रार्था सफला सन्तु पूर्णा सन्तु मनोरथः, शत्रूणां बुद्धि–नाशास्तु, मित्राणां उदयस्तव, आयु आरोग्यं एश्वर्यं एतत् त्रितयं अस्तु ते, जीव त्वं शरदं शतम्।।

मौली बंधवाना – यदा बन्धन दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय

सुमनस्यामानः। तनम आबध्नामि शतशारदाय आयुष्मान जरदर्ष्टिर्यथासत।

यजमान का अपने आप को तिलक व फूल लगाना – परमात्मने पुरुषोत्तमाय पञचभूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्रनाथाय आत्मने नारायणाय समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः।

दीपक को तिलक फूल और अर्घ चढ़ाना – स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतः तिमिरापहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक और फूल लगाना – वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढयो गन्धवत्तमः आधार सर्व देवानां धूपोयं परिकल्पतः।

सूर्य भगवान को तिलक और फूल लगाना – नमो धर्म निधानाय नमः सुकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय श्री भास्कराय नमो नमः।

तिल मिश्रित पानी डालते हुए पढ़िये – यत्रास्ति माता न पिता न बन्धु भ्रातापि नो यत्र सहृज्जनश्च। न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।

ओम् तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य (मास, पक्ष, तिथि, वार) महागणपत्ये, कुमाराय, श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः, प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः चातुर्वेदेंश्वराय, सानुचराय, ऋतुपतये, नारायणय, दुर्गायै, त्र्यम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वातादिभ्यः, पितृगणयागदेवताभ्यः,

भगवते वासुदेयवाय, संकर्षणाय, प्रद्युमनाय, अनिरुद्धाय, सत्याय–पुरुषाय, अच्युताय माधवाय, गोविन्दाय, सहस्त्रनामने, विष्णवे, लक्षमीसहिताय, नारायणाय, भवाय देवाय, शर्वादेवाय, रुद्रायदेवाय, पशुपतयेदेवाय, उग्रायदेवाय, भीमायदेवाय, महादेवाय, ईशाणाय देवाय ईश्वरायदेवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय, विनायकाय, एकदन्ताय, कृष्णपिंगलाय, गजाननाय, लम्बोदराय... भालचन्द्राय, हेरम्बाय, आखुरथाय, विघ्नेशाय, विघ्नभक्ष्याय, वल्लभासहिताय, श्रीमहागणेशाय, क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय, मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय तेजोरूपाय, प्रभा सहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै, कामायै चार्वङ्गयै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै, शारदा भगवत्यै, श्रीमहाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै, वैखरी भगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गा भगवत्यै, युमना भगवत्यै, कालिका भगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महा लक्ष्मयै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, सहस्रनामन्यै देव्यै भवान्ये, अभयंकरी देवयै, क्षेमंकरी भगवत्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कुष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गा भगवत्यै सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्राधिपतये आमुक... भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय, अग्नये शक्तिहस्ताय, यमाय दण्डहस्ताय, नैर्ऋतये

खड्गहस्ताय, वरुणाय पाशहस्ताय, वायवे ध्वजाहस्ताय, कुवेराय गदाहस्ताय, इशानाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे, पद्महस्ताय, विष्णवे चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः, कुलनागदेवताभ्यः, अग्न्यादित्याभ्यां वरुण चन्द्रमोभ्याम, कुमारभोमम्यां, विष्णोबुधाभ्यां, इन्द्रब्रहस्पतिभ्यां, सरस्वतीशुक्राभ्यां, प्रजापति शनैश्चराभ्यां, गणपतिराहुभ्यां, रूद्रकेतुभ्या, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्तागस्त्याभ्यां, ब्रह्मणे, कुर्माय, ध्रुवाय, अनन्ताय, हरये, लक्ष्म्यै, कमलायै शिख्यादिभ्यः पंच चत्वारिश्द्वास्तोष्पति, यागदेवताभ्यः ब्रह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्या दिभ्योमातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वर देवताभ्यः राकादेवताभ्यः, त्रिकादेवताभ्यः, सिनीवाली देवताभ्यः, यामीदेवताभ्यः, रौद्रीदेवताभ्यः, वारुणीदेवताभ्यः, ब्राहस्पत्यै देवताभ्यः, ओम् भू देवताभ्यः, ओम् भुवोः र्देवताभ्यः, ओम् स्वर्देवताभ्यः, ओम् भू भुर्वः स्वर्देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयाग देवताभ्यः धूर्म्यः उपधूर्म्यः महागायत्र्यै, सावित्र्यै, सरस्वत्यै, हरकादिभ्यो, वटुकादिभ्यः धूपदीप संकल्पात् सिद्धिरस्तु धूपो नमः दीपो नमः।

अपसव्येन (बायें जन्यू रखकर तिल सहित जल की धारा निर्माल्यपात्र में डालते हुए पितरों का तर्पण करें)।

नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो, नमो धर्माय विष्णवे। नमो यमाय रुद्राय कान्तार पतये नमः। ओम् तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत तिथै अद्य पित्रै, पितामहाय, प्रपितामहाय, मात्रे, पितामह्यै, प्रपितामह्यै, मातामहाय, प्रमातामहाय, वृद्धप्रमातामहाय। माता मह्यै

प्रमाता–मह्यै, वृद्धप्रमाता–मह्यै। समस्त माता पितृभ्यो, द्वादशदैवतेभ्य पितृभ्य दीपः स्वधा धूपः स्वधा।

'सव्येन' (दायाँ यज्ञोपवीत रखकर चावल के दाने सहित दर्भ के दो तिनके दायें हाथ में सीधे पकड़ कर तीन बार पढ़े) ओम् भूः पुरुषम् आवाहयामि नमः ओम् भुवः पुरुषय आवाहयामि नमः ओम् स्वः पुरुषम् आवाहयामि नमः, ओम् भूर्भवः स्वः पुरुष्यम आवाहयामि नमः ओम् सूर्यकार्ण्यै विद्महे, भानुरत्नाय धीमहि तन्तो राज्ञी प्रचोदयात। 3।। ओम् भूभुर्व स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।3।। बीजत्रयाय विद्यहे, तत्प्रधानाय धीमहि, तन्नः शक्तिः – प्रचोदयात्।3। तत सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथि महागणपतेः, कुमारस्य, श्रिया, सरस्वत्या, लक्षभ्याः विश्वकर्मणः, द्वारदेवतानां, प्रजापते, ब्रह्माणः कलशदेवतानां, ब्रह्मविष्णा महेश्वरदेवतानां, इष्टदेवस्य, गणपतिकलशमण्डलयागदेवतानां, हेरकादीनां.,वटुकादीनां, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पापनिवारणार्थ श्रीमहाराज्ञी प्रीत्यर्थ नव दुर्गा भगवती सन्तोशनार्थ गणपतिकलशमण्डल यागदेवताः पूजनं अर्चाम् अहम् करिष्ये ओम् कुरुष्व। **(तिल सर्षप और जौ के दोनों को चारों तरफ फेंके फिर कलश के सामने दर्भ (ध्रुवा) के दो काण्ड आसन के लिए रखते जाना)** – कलशे महागणपतेः कुमारस्य श्रियः सरस्वत्याः लक्षभ्याः, विश्वकर्मणेः, द्वारदेवतानां, प्रजापतेः, ब्रह्मणः कलशदेवतानां, ब्रह्मविष्णु महेश्वरदेवतानां श्रीमहाराज्ञी, शैलपुत्र्यै,

ब्रह्मचारिण्यै, कुष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, हेरकादीनाम् वटुकादीनाम् इदम् आसनं नमः।

अब चावल सहित दो दर्भ (ध्रुवा) के तिनके हाथ में लेकर देवताओं से पूजा करने की आज्ञा लेना – कलशे महागणपतये, कुमाराय, श्रियै सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वारदेवताभ्यः, प्रजापतयै, ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कुष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गा भगवत्यै श्रीमहाराज्ञी भगवत्यै हेरकादिभ्यः, वटुकादिभ्यः, युष्मान वः पूजयामि ओम् पूजय।

दर्भ के तिनके हाथ में ही रख कर चावल कन्दों से फेंक कर नये चावल के दाने हाथ में रखकर पढिये – महागणपतिं, कुमारं श्रियं, सरस्वतीं, लक्ष्मीं, विश्वकर्माणं, द्वारदेवताः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरः देवता श्री महाराज्ञी शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणीं, चण्ढगण्टां, कुष्माण्डीं, स्कन्दमातुं, सिद्धदां, महा गौरीं, कालरात्रीं, नव दुर्गा भगवतीं, हेरकादीनं वटुकादीन् आवाहयिष्यामि ओम आवाहय। **(हाथ के दर्भ व चावल कन्दों से फेंक कर कलश पर फूल चढाते हुए पढें)** – आवाहयाम्यह् देवं गणेशं सुरपूजितम्। सदैव विघ्न हरतारं सर्व कामफल प्रदाम। रक्तवर्णो महातेजो रक्तस्रंग्दामभूषितः। बलिः पुष्पं चरुश्चैव धूपोयं प्रतिगृहयताम। माला–धरा–च्युत विभो परमात्म–मूर्ते सर्वज्ञ नाथ परमेश्वर सर्व शक्ते। आगच्छ में

करु दयां प्रतिमां भजस्व, पूजां गृहाण मत्–अनुगृह–कामयाद्य।

(निम्नलिखित श्लोक तीन बार पढ़ते हुए फूल चढ़ायें:) भगवन पुण्डरीकाक्ष भक्तानु–गृहकारक, अस्मत् दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो ।3।। इत्याहूय तु गायत्रीं त्रि समुच्चार्य तत्व–वित्, मनसा चिन्तितै–र्द्रव्य–देवम् आत्मनि पूजयेत्। तेजोरूपं ततः क्षिप्तवा प्रतिमायां पुन–र्यजेत। **(जव के दाने कन्धों से फेंक कर प्राणायाम करके कटोरी का पानी हाथ से वापस कटोरी में डालतें हुए पढ़े) (देवतावों के पाद धोना) –** पद्यार्थम् उदकं नमः शन्नों देवीर–अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंय्योर अभिस्रवन्तु नः। (इस कटोरी में पानी, लाजा, कुकुंम या तिलक, सर्वोशधिः विष्टर यह पाँच द्रव्य डालते हुए पढ़े) – लाजाश्च कुंकुमं चैव सर्वौषधि समन्वितम् दभाकुरं जलं चैव पंचांग पाद्यलक्षणम्। विष्टर से इस जल की छींटे कलश तथा क्षेत्रपालों पर छिडकते हुए पढिये – (पहले नमस्कार करना) – भगवन्तः पाद्यम् पाद्यम्। महा गणपतये, कुमाराय, श्रिये सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देताभ्यः, प्रजापतये, ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वरदेवताभ्यः, दुर्गायै, त्रयम्बकायै, वरुणायै, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वातादिभ्यः, पितृगणदेवताभ्यः, भगवते वासुदेवाये संकर्षणाय प्रद्युमनाय अनिरुद्धाय, सत्याय पुरुषाय, अच्युताय माधवाय गोविन्दाय, सहस्त्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय, भवाय देवाय शर्वायदेवाय,

रुद्रायदेवाय, पशुपतयेदेवाय, उग्रायदेवाय, भीमाय, देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वरायदेवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय। विनायकाय, एकदन्ताय, कृष्णपिण्ङ्गलाय, गजाननाय, लम्बोदराय, भालचन्द्राय, हेरम्बाय, आखुरथाय, विघ्नेशाय, विघ्नभक्ष्याय, वल्लभासहिताय, श्रीमहागणेशाय, क्लीं कां कुमाराय। षण्मुखाय, मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय, अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय तेजोरूपाय, प्रभासहिताय आदितयाय भगवत्यै, अमायै, कामायै, चार्वङ्गयै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै, श्रीशारदा भगवत्यै्, श्रीमहाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै, कालिका भगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्द्रयै सहस्रनामन्यै देव्यै भवान्यै, अभयंकरी देव्यै, क्षेमंकरी भगवत्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्राधिपतयै... भैरवाय, इन्द्राय वज्रहस्ताय, अग्न्यै शक्तिहस्ताय, यमाय दण्डहस्ताय नैऋर्तये खड्गहस्ताय, वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजाहस्ताय, विष्णवे चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योष्टाभ्यः, कुलनागदेवताभ्यं, अग्न्यदित्याभ्यां, वरुण चन्द्रमोभ्याम, कुमारभौमाभ्यां विष्णो बुधाभ्या, इन्द्रब्रहस्पतिभ्यां, सरस्वति शुक्राभ्यां, प्रजापति शनैष्चराभ्यां, गणपतिराहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्तागस्त्याभ्यां, ब्रह्मणे, कुर्माय, ध्रुवाय, अनन्ताय, हरये, लक्ष्म्यै, कमलायै

शिख्यादिभ्यः, पंच चत्वारिशंद्वास्तोष्पति, यागदेवताभ्य ब्रह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्योमातृभ्यः ललितादिभ्य मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वर देवताभ्यः राकादेवताभ्य त्रिकादेवताभ्यः सिनीवालीदेवताभ्यः, यामी देवताभ्य रौद्रीदेवताभ्यः, वारूणी देवताभ्यः, ब्राहस्पत्यै देवताभ्यः, ओम् भूं देवताभ्याः, ओम् भुवो देवताभ्यः, ओम् सर्वेदेवताभ्यः, ओम् भूं भुवः स्वदेवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयाग देवताभ्यः धुर्भ्यं, उपधूर्भ्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कुष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, हेरकादिभ्यो, वटुकादिभ्यः पाद्यं नमः (कटोरी का शेष पानी निर्माल्य में छोड दें) पाद्य शेषं निवारयेत्।

(देवतावों का मुख धोना)

फिर से कटोरी से पानी हाथ पर डाल कर वापिस डालते हुए पढ़े– शन्नो दवीर्–अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये। शंय्योर – अभिस्रवन्तु नः (इस कटोरी में पानी, दूध, विष्टुर, घी, दही, चावल, जव और ब्रेर सर्षप ये आठा द्रव्य जो अर्घ्य कहलाता है डालते हुए पढ़े– आपः क्षीरं कुशा–ग्राणि घृतं च दधि तण्डुलाः यवाः सिद्धार्थ–काश्चेति ह्य–र्ध्यम–अश्टांगम्–उच्यते **(यह कटोरी हाथ में लेकर पढ़िये) –** भगवन्तः अर्घ्यम् – अर्घ्यम्।

(विष्टुर से कलश को छींटे देते हुए पढ़े) – महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः,

प्रजापतये ब्रह्मणे कलशादेवाताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वरदेवताभ्यः दुर्गार्य, त्र्यमबकाय, वरूणाय, यज्ञपुषाय, अग्निष्वत्तदिभ्यः, पितृगणदेवताभ्यः भगवते वासुवुदवाय, संकर्षणाय, प्रद्युमनाय, अनिरुद्धाय, सत्याय–पुरुषाय, अच्युताय, माधवाय, गोविन्दाय, सहस्त्रनाम्ने विष्णवे, लक्ष्मी सहिताय नारायणाय, भवाय देवाय, शर्वायदेवाताय, रुद्रायदेवाय, पशुपतये देवाय, उग्रायदेवाय, भीमाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय, उमा सहिताय – शिवाय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय विनायकाय एकदन्ताय, कृष्णापिंगलाय, गजाननाय लम्बोदराय, भालचन्द्राय, हेरम्बाय, आखुरथाय, विघ्नेशाय, विघ्नभक्षाय, वल्लभासहिताय, श्रीमहागणेशाय, क्लीं कां कुमाराय, षण्मुयखाय, मयूरवाहनाय, सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय, नीलशवाय, प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै कामायै चावङ्गयै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै, श्रीशारदा भगवत्यै, श्रीमहाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै, वैखरी भगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गा भगवत्यै, यमुना भगवत्यै, कालिका भगवत्यै, सिद्धलक्ष्मयै महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्द्रयै सहस्रनामन्यै देव्यै भवान्यै, अभयंकरी देव्यै, क्षेमकरी भगवत्यै, सर्वशुत्रुघातिन्यै, इह राष्टाधिपत्यै अमुक भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय, अग्नये

शक्तिहस्ताय, यमाय दण्डहस्ता, नैऋर्तयै खड्गहस्ताय, वरुणाय पाशहस्ता वायवे ध्वजाहस्ताय, कुवेराय गदाहस्ताय, इशानाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय, विष्णवे चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः, अग्न्यादित्याभ्यां, वरुण चन्द्रमोभ्याम, कुमारभौमाभ्यां, विष्णोबुधाभ्यां, इन्द्रब्रहस्पतिभ्यां, सरस्वती शुक्राभ्यां, प्रजापति शनैश्चराभ्यां, गणपतिराहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्तागस्त्याभ्यां ब्रह्मणे, कुर्माय, ध्रुवाय, अनन्ताय, हरये, लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः, पंच चत्वारिशद्वास्तोष्पति, यागदेवताभ्यः ब्रह्मादिभ्यो मातृभ्याः गौर्यादिभ्योमातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वर देवताभ्यः राकादेवताभ्यः, त्रिकादेवताभ्यः, सिनीवालीदेवताभ्यः, यामीदेवताभ्यः, रौद्रीदेवताभ्यः वारुणीदवेताभ्यः, ब्राहस्पत्यै देवताभ्यः, ओम् भूर्देवताभ्यः ओम् भुवो देवताभ्यः ओम् स्वर्देवताभ्यः, ओम् भूर्भुवः स्वर्देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयाग देवताभ्यः धुर्म्य, उपर्धूम्यः, महायत्र्यै, सावित्रयै सरस्वत्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कुष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, हेरकादिभ्यो, वटुकादिभ्यः, इदं वः अर्घ्यं नमः।

(थोडा सा साफ जल अपर्ण करते हुए पढ़े) – तस्मात् – विराड–अजायत विराजो अधिपुरुषः। सजातो अतिरिच्यत, पश्चात् भूमिम अथो पुरः। शन्न आपो धन्वन्या। शन्नः सन्त्वनूप्याः। शन्नः समुद्रिया न आपः, शमुनः सन्तु कूप्याः

महागणपते, कुमार श्री सरस्वती, लक्ष्मी विश्वकर्मनः द्वार्देवता, प्रजापति, ब्रह्माण कलश देवताः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताः हेरकादयो वटुकादयः आचमनीयं नमः।

आरात्रिका (आलत) अर्पण

(बायें हाथ के बीच में चावल के दाने और पानी रखकर देवताओं की आतल निकाल कर कन्धे पर फेंकते हुए पढ़े)– ओम् प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणीहि विश्वतः। यातु धानस्य रक्षसो बलं विरुज वीर्यम्। **(वस्त्र चढाते हुए पढ़े)** – युवा–सुवासाः परिवीत आगात् स उच्छ्रेयान भवति जायमानः तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति साध्यो मनसा देवयन्तः महागणपते, कुमार श्री सरस्वती, लक्ष्मी, विष्वकर्मण् द्वार्देवता, प्रजापते, ब्रह्मण कलशदेवताः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवता, हेरकादयो वटुकादयः वस्त्रं परिकलप्यामि नमः। **(यज्ञोपवीत अर्पण करते हुए पढ़ें)** – यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते–र्यत सह्जं पुरुस्तात्, आयुष्यम् अग्रयम, प्रति मुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं, बलम्अस्तु तेजः यज्ञोपवीतम्–असि, यज्ञस्येत्वा, उपवीतेन उपनह्यामि महागणपते, कुमार, श्री सरस्वती, लक्ष्मी, विष्वकर्मण, द्वार्देवता, प्रजापते, ब्रह्मकलशदेवताः, ब्रह्माविष्णुमहेश्व देवताः हेरकादयो वटुकादयः यज्ञोपवीतम् अर्पयामि नमः।

अब कलश पर तिलक की छींटे डालते हुए पढ़े – गन्ध द्वारां दुरा–धर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ईश्वरीं सर्वभूतानां ताम्–इहोपह्वये श्रियम महागणपते समालभनं गन्धो नमः, कुमाराय श्रियै, सरस्वत्यै, लक्षमयै विश्वकर्मणे, द्वारदेवताभ्यः, प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वर देवताभ्यः

दुर्गायै, त्रयम्बकायै, वरुणायै, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वात्तदिभ्य पितृगणदेवताभ्यः भगवते वासुदेवायं, संकषणाय, प्रद्युमनाय अनिरुद्धाय, सत्याय–पुरुषाय, अच्युताय, माध्वाय, गोविन्दाय सहस्रनाम्ने विष्णवे, लक्ष्मी सहिताय नारायणाय। भवाय देवाय, शर्वायदेवाय, रुद्रायदेवाय, पशुपतये देवाय उग्रायदेवाय, भीमाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय ईश्वराय देवाय, उमा सहिताय–शिवाय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय विनायकाय, एकदन्ताय, कृष्णपिंगलाय, गजाननाय लम्बोदराय, भालचन्द्राय, हेरम्बाय, आखुरथाय, विघ्नेशाय, विघ्नभक्षाय, वल्लाभासहिताय, श्रीमहागणेशाय, क्लीं कां कुमाराय। षण्मुयखाय, मयूरवाहानाय, सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलशवाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्गयै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै याक्षिणयै श्री शारिका भगवत्यै, श्रीशारदा भगवत्यै, श्री महाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै, वैखरी भगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गा भगवत्यै, यमुना भगवत्यै, कालिका भगवत्यै, सिद्धलक्ष्मयै महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्द्रयै सहस्रनामन्यै देव्यै भवान्यै, अभयंकरी देव्यै, क्षेमकरी भगवत्यै, सर्वशत्रुधातिन्यै, इह राष्टाधिपत्यै अमुक भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय, अग्नये शक्तिहस्ताय, यमाय दण्डहस्ताय, नैऋतये, खड्गहस्ताय, वरुणाय पाशहस्ता वायवे ध्वजाहस्ताय, कुवेराय गदाहस्ताय, इशानाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय, विष्णवे

चक्रहस्ता, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः अग्न्यादित्याभ्यां, वरुण चन्द्रमोभ्याम, कुमारभौमाभ्यां, विष्णोबुधाभ्यां, इन्द्रब्रहस्पतिभ्यां, सरस्वती शुक्राभ्यां, प्रजापति शनैश्चराभ्यां, गणपतिराहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्याः, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्तागस्त्याभ्यां ब्रह्मणे, कुर्माय, ध्रुवाय, अनन्ताय, हरये, लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः, पंच चत्वारिशद्वास्तोष्पति, यागदेवताभ्यः ब्रह्मादिभ्यो मातृभ्याः, गौर्यादिभ्योमातृभ्यः, ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वर देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिकादेवताभ्यः सिनीवालीदवेताभ्यः यामीदेवताभ्याः, रौद्रीदेवताभ्याः, वारुणीदेवताभ्याः, ब्राहस्पत्यै देवताभ्यः ओम् भूर्देवताभ्यः, ओम् भुवो देवताभ्यः, ओम् स्वर्देवताभ्यः ओम् भूर्भुवः स्वर्देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयाग देवताभ्यः धूर्भ्य, उपर्धूभ्यः महायत्र्यै, सावित्रयै सरस्वत्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कुष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, हेरकादिभ्यो, वटुकादिभ्यः, समालभनं गन्धो नमः।

(हाथ से गन्ध तिलक साफ करके कलश पर अर्घ फूल चढ़ाना) पुष्पवती, प्रसुमतीः फलिनीर–अफला वत। अश्वा इव सजित्वरीर वीरुधः पार–यिष्णवः कलशे महागणपतये अर्घो नमः पुष्पं नमः। कुमाराय श्रियै सरस्वत्ये लक्ष्मयै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णुमहेश्वर देवताभ्यः, दुर्गायै, त्र्यमबकायै, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निनष्वत्तदिभ्यः, पितृगणदेवताभ्यः, भगवते वासुवेदवाय, संकर्षणाय, प्रद्युमनाय, अनिरुद्धाय,

सत्याय–पुरुषाय, अच्युताय, माधवाय, गोविन्दाय, सहस्त्रनाम्ने विष्णवे, लक्ष्मी सहिताय नारायणाय, भवाय देवाय, शर्वायदेवताय, रुद्रायदेवाय, पशुपतये देवाय, उग्रायदेवाय, भीमाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय, उमा सहिताय–शिवाय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय विनायकाय एकदन्ताय, कृष्णपिंगलाय, गजाननाय, लम्बोदराय, भालचन्द्राय, हेरम्बाय, आखुरथाय, विघ्नेशाय, विघ्नभक्षाय, वल्लभासहिताय, श्रीमहागणेशाय, क्लीं कां कुमाराय, षण्मुखाय, मयूरवाहनाय, सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय, नीलश्वाय, प्रत्यक्षदेवताय परमार्थसाराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै आमायै कामायै चार्वङ्गयै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै, श्रीशारदा भगवत्यै, श्री महाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वाला भगवत्यै, . व्रीडा भगवत्यै, वैखरी भगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गा भगवत्यै, युमना भगवत्यै, कालिका भगवत्यै, सिद्धलक्ष्मयै महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्द्रयै सहस्रनामन्यै देव्यै भवान्यै, अभयंकरी देव्यै, क्षेमकरी भगवत्यै, सर्वशत्रुधातिन्यै, इह राष्टाधपत्यै अमुक भैरावाय इन्द्राय वज्रहस्ताय, अग्नये शक्तिहस्ताय, यमाय दण्डहस्ता, नैऋतये खड्गहस्ताय, वरुणाय पाशहस्ता, वायवे ध्वजाहस्ताय, कुवेराय गदाहस्ताय, इशानाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय, विष्णवे चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः, अग्न्यादित्याभ्यां, वरुण चन्द्रमोभ्याम,

कुमारभौमाभ्यां, विष्णोबुधाभ्यां, इन्द्रब्रहस्पतिभ्यां, सरस्वती शुक्राभ्यां, प्रजापति शनैश्चराभ्यां, गणपतिराहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्तागस्त्याभ्यां ब्रह्मणे, कुर्माय, ध्रुवाय, अनन्ताय, हरये, लक्ष्म्यै, कमलायै शिख्यादिभ्य, पंच चत्वारिशद्वास्तोष्पति, यागदेवतभ्यः ब्रह्मादिभ्यो मातृभ्याः, गौर्यादिभ्योमातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वर देवताभ्यः राकादेवताभ्यः, त्रिकादेवताभ्यः, सिनीवालीदेवताभ्यः, यामीदेवताभ्यः रौद्रीदेवताभ्यः, वारुणीदवेताभ्यः ब्राहस्पत्यै, देवताभ्यः, ओम् भूर्देवताभ्यः, ओम् भुवो देवताभ्यः, ओम् स्वर्देवताभ्यः ओम् भूर्भुवः स्वर्देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयाग देवताभ्यः, धूर्म्य, उपर्धूभ्यः, महागायत्र्य, सावित्रयै सरस्वत्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कुष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, हेरकादिभ्यो, वटुकादिभ्यः, अर्घो नमः पुष्पं नमः।

(क्षेत्रपालों को केवल अर्घ चढ़ाना) – हेरकादिभ्यः अर्घो नमः। वटुकादिभ्यः अर्घो नमः।

(धूप चढ़ाते हुए पढे) – धुर–असि धूर्व धूर्वन्तं योस्मान – धूर्वति–तं धूवर्य, वयं धूर्वामः तंच धूर्व। देवनाम–असि वहनितमं सस्नितमं पप्रितमं इष्टतमं विष्णो क्रमो–स्या–हुतम–असि हवि–र्दानं दृंहस्व म्वाहान–मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रेक्ष उरुर्त्वा वाताय, वसवस्त्वा, धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसांगिर–स्वत,। रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रेष्टु–भेन छन्दसांगिर–स्वत, आदित्यास्वा धूपयन्तु जागतेन

छनदसागिर स्वत, विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपय अनुष्टुभेन छन्दसांगिर स्वत्, इन्द्रस्त्वा धूपयतु, वरुणस्त धूपयतु विष्णुसत्वा धूपयतु। गणपति कलशमण्डल देवताभ श्री भगवती हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्यः धूपं परिकल्पया नमः। **(कर्पूर चढ़ाना)** – कर्पूर दीपं सुमनो हरं प्रभोददामि देववर प्रसीदभो पापान्धकारं त्वरितं निवार हरिण्यबा सेनानी रोषधीनं पतेशीवा द्वीपं गृहाण कपूर कपिलाऽ त्रिवर्तिकम। गणपति कलशमण्डल देवताभ्यः शैलपुत्र्यै ब्रह्मचारिण्यै, कुष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्यः कर्पूर परिकल्पयामि नमः। **(रत्नदीप चढ़ाना)** – ब्रह्मणोस्य मुखम् – आसीत् बाहू राजन्यः कृतः ऊर तत्–अस्य यत् वैश्सः पद्भ्यां षूद्रो अजायत। तेजोसि शुक्रम–असि जयोतिर्–असि धामासि प्रियं देवनाम् अनादृष्ट देव यजनं देवताभ्यस्त्व देवताभ्यो, गृहणामि देवेभ्यस्त्वा यज्ञेभ्यो गृहणामि गणपति कलशमण्डल देवताभ्यः, सहस्र नामनि दुर्गा देवी भवानी हेरकादिभ्यो, वटुकादिभ्यः रत्नदीप परिकल्पयामि नमः।

(खड़ें होकर चामर करें) –

हेमजा सुतं भजे गणेश ईश नन्दनम्,
एकदन्त वक्र तुण्ड नाग यज्ञ सूत्रकम्।
रक्त गात्र धूम्र नेत्र शुक्ल वस्त्र मण्डितम।।
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।०।।

पाशपाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणम्,
अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्रकोटि निर्मलम्।
चित्रमाल भक्तिज़ाल भालचन्द्र शोभितम्।।
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।०।।

विश्ववीर्य विश्वसूर्य विश्वकर्म निर्मलम्,
विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम्।
चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितं चतुर्युगम्।।
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।०।।

भूत भव्य हव्य कव्य भर्गो भार्गव वन्दितम्,
देव वह्नि काल जाल लोकपाल वन्दितम्।
पूर्ण ब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम्।।
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।०।।

ऋद्धि बुद्धि अष्टसिद्धि नव निधान दायकम्,
यज्ञकर्म सर्वधर्म सर्व वर्ण अर्चितम्।
भूतधूत दुष्ट मुष्ट दान्वै सर्दार्चितम्।।
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।०।।

हर्ष रूप वर्ष रूप पुरूष रूप वन्दितम्,
शोर्प कर्ण रक्त वर्ण रक्त चन्दन लेपितम्।
योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टि दायकम्।।
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।०।।
नमोस्तुते गणेश्वरम्, नमोस्तुते लम्बोदरम।।
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।०।।
नमोस्तुते गणेश्वरम् नमोस्तुते लम्बोदरम्।।
कल्पवृक्ष।।

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे।

उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे।।

घोरं हर मम नरक रिपो, केशव कल्मषभारं।

माम्–अनुकम्पय दीनम्–अनाथं, करु भव–सागरपारम्

घोरं हर मम०।।1।।

जय जय देव जया–सुरसूदन, जय केशव जय विष्णो।

जय लक्ष्मीमुख–कमल–मधुव्रत, जय दशकन्धर जिष्णो।।

घोरं हर मम०।।1।।

यद्यपि सकलम्–अहं कलयामि हरे, नहि किम्–अपि स सत्वम्।

तत्–अपि न मुञ्चति माम्–इदम्–अच्युत, पुत्रकलत्र–ममत्वं।

घोरं हर मम०।

पुनर्–अपि जननं पुनर्–अपि मरणं, पुनर्–अपि गर्भ–निवासम्।

सोढुम्–अलं–पुनर्–अस्मिन्–माधव, माम्–उद्धर निजदासम्।

घोरं हर मम०।

त्वं जननी जनकः प्रभुर–अच्युत, त्वं सुहृत–कुलमित्रम।

त्वं शरणं शरणा–गतवत्सल, त्वं भव–जलधि–वहित्रं

घोरं हर मम०।

जनक–सुता–पति–चरण–परायण, शंकर–मुनिवर–गीतं

धारय मनसि कृष्ण–पुरुषोतम, वारय संसृति–भीतिम्।।

घोरं हर मम०।

ॐ लीलारब्ध–स्थापित–लुप्ताखिल–लोकां,

लोकातीतै–र्योगिभिर्–अन्तर्–हृदि–मृग्याम्।

बालादित्य–श्रेणि–समान–द्युति–पुंजां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम–अहम्–ईडे ।।
आशा–पाश–क्लेश–विनाशं विदधानां,
पादाम्भोज–ध्यान–पराणां पुरुषाणाम् ।
ईशीम्–ईशाङ् गार्ध हरां तां तनुमध्यां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम–अहम्–ईडे ।।
प्रत्याहार–ध्यान–समाधि–स्थितिभाजां,
नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम् ।
सत्य–ज्ञाना–नन्दमयीं तां तडित्–आभां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम–अहम्–ईडे ।।
चन्द्रपीडा–नन्दितमन्द–स्मितवक्त्रां,
चन्द्रापीडा–लंकृत–लोला–लकभाराम् ।
इन्द्रोपेन्द्रा–द्यर्चित–पादाम्बुजयुग्मां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम–अहम्–ईडे ।।
नाना कारैः शक्ति–कदम्बै–र्भुवनानि,
व्याप्त स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका ।
कल्याणीं तां कल्पलताम् आनतिभाजां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम–अहम्–ईडे ।।
मूलाधारात्–उत्थित–वन्तीं विधिरन्ध्रं,
सौरं–चाद्रं धाम विहाय ज्वलितागङ्ीम ।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्–अभिवन्द्यां,
गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम–अहम्–ईडे ।।

आदि—क्षान्ताम्—अक्षर—मूर्त्यां, विलसन्तीं,
भूते भूते भूत कदम्बं प्रसवित्रीम्।
शब्द ब्रह्मा—नन्द मयीं ताम्—अभिरामां
गौरीम्—अम्बाम्—अम्बु—रुहा—क्षीम—अहम्—ईडे।।
यस्याः कुक्षौ लीनम् अखण्डं, जगत्—अण्डं
भूयो भूयः प्रादुर्—अभूत—अक्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीम,
गौरीम्—अम्बाम्—अम्बु—रुहा—क्षीम—अहम्—ईडे।।
यस्याम्—एतत्प्रोतम्—अशेषं मणिमाला,
सूत्रे यत्—वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
ताम्—अध्यात्म—ज्ञानपदव्या—गमनीयां,
गौरीम्—अम्बाम्—अम्बु—रुहा—क्षीम—अहम्—ईडे।।
नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः
साक्षी यस्याः सर्गविधौ सहंरणे च।
विश्वत्राण—क्रीडन शीलां शिवपत्नी,
गौरीम्—अम्बाम्—अम्बु—रुहा—क्षीम—अहम्—ईडे।।
पूजा काले भावविशुद्धिं विदधानो,
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वाचां सिद्धिं सम्पतिम्—उच्चैः शिवभक्तिं,
तस्या—वश्यं पर्वत—पुत्री विदधाति।।

ओंम तत सत ब्रह्मादि तावत तिथो — माससे.. पक्ष तिथौ.. वासरान्वितायां भग्वत्यै अमायै, कामायै, चार्वङ्गयै

टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिका भगवत्यै, श्रीशारदा भगवत्यै, श्रीमहाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै, वैखरी भगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गा भगवत्यै, यमुना भगवत्यै, कालिका भगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्मयै, महात्रिपुरसुन्द्रयै सहस्रनामन्यै, देव्यै भवान्यै, अभयंकारी देव्यै, क्षेमंकरी भगवत्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्राधिपतये, अमुक भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय, अग्नये शक्तिहस्ताय, यमाय दण्डहस्ताय, नैऋतये खड्गहस्तास, वरुणाय पाशहस्ताय, वायवे ध्वजाहस्ताय, कुवेराय गदाहस्ताय, इशानाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय, विष्णवे चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः, कुलनागदेवताभ्याः, अग्न्यादित्याभ्यां, वरूण चन्द्रमोभ्यां, कुमाराभौमाभ्यां, विष्णो–बुधाभ्यां, इन्द्रब्रहस्पतिभ्यां, सरस्वतीशुक्राभ्यां, प्रजापति शनैश्चराभ्यां, गणपत्रिाहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्तागस्त्याभ्यां, ब्रह्मणे कुमार्य, ध्रुवाय, अनन्ताय, हरये, लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः, पंच चत्वारिशद् वास्तोष्पति, यागदेवताभ्यः ब्रह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्योमातृभ्यः, ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वर देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिकादेवताभ्यः सिनीवालीदेवतभ्यः, यामीदेवताभ्यः रौद्रदिवेताभ्याः, वारूर्णी देवताभ्यः, ब्रहस्पत्ये देवताभ्यः, ओम् भू देवतीयः, ओम् भुवो देवताभ्यः ओम् स्वर्देवताभ्यः ओम् भू भुवः स्वर्देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयाग देवताभ्यः धूर्म्यः उपधूभ्यः महागायत्र्यै सावित्र्य सरस्वत्यै,

शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कुष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गा भगवत्यै सहस्रनाम्न्यै दुर्गादेव्यै भवान्यै। गणपति कलशमण्ड देवताभ्यः श्री भगवती हेरकादिभ्यो, वटुकादिभ्यः रत्नदीपं, धूपं, कर्पूरं, चामरं परिकल्पयामि नमः।

(छत्र के रूपमें कलश पर फूल चढ़ाते हुए पढ़ें)

काण्डात–कांण्डात प्ररोहन्ती परुषः पुरषस्पारे। एदानोदूर्वे प्रतनू सहस्त्रेण शतेन गणपति कलशमण्डल देवताभ्यः श्री भगवाती अमायै, कामायै, चार्वङ्गयै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिका भगवत्यै, श्रीशारदा भगवत्यै, श्रीमहाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै, वैखरी भगवत्यै, वित्स्ताभगवत्यै, गङ्गा भगवत्यै, यमुना भगवत्यै, कालिका भगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्मयै, महात्रिपुरसुन्द्रयै सहस्नामन्यै, देव्यै भवान्यै, अभयंकारी देव्यै, क्षेमंकरी भगवत्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्राधिपतये, अमुक भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय, अग्नये शक्तिहस्ताय, यमाय दण्डहस्ताय, नैऋतये खड्गहस्तास, वरुणाय पाशहस्ताय, वायवे ध्वजाहस्ताय, कुवेराय गदाहस्ताय, इशानाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय, विष्णवे चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः, कुलनागदेवताभ्याः, अग्न्यादित्याभ्यां, वरुण चन्द्रमोभ्यां, कुमाराभौमाभ्यां, विष्णो–बुधाभ्यां, इन्द्रब्रहस्परिभ्यां, सरस्वतीशुक्राभ्यां, प्रजापति शनैश्चराभ्यां, गणपत्तिराहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्तागस्त्याभ्यां, ब्रह्मणे कुमार्य,

ध्रुवाय, अनन्ताय, हरये, लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः, पंच चत्वारिशद् वास्तोष्पति, यागदेवताभ्यः ब्रह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्योमातृभ्यः, ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वर देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिकादेवताभ्यः सिनीवालीदेवतभ्यः, यामीदेवताभ्यः रौद्रदिवेताभ्याः, वारूर्ण देवताभ्यः, ब्रहस्पत्ये देवताभ्यः, ओम् भू देवतीयः, ओम् भुवो देवताभ्यः ओम् स्वर्देवताभ्यः ओम् भू भुवः स्वर्देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयाग देवताभ्यः धूर्भ्यः उपधूभ्यः महागायत्र्यै सावित्र्य सरस्वत्यै, शैलपुत्र्दै, ब्रह्मचारिण्यै, कुष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, भगवत्यै सहस्रनाम्न्दै दुर्गादेव्यै भवान्यै। हेरकादिम्यो वटुकादिम्य छत्रं परिकल्पयापि नमः

(आईना दिखाते हुए पढ़े) तत् चक्षु—देवर्हितं पुरस्तात् शुक्रम उच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् गणपति कलशमण्डल देवताभ्यः श्री भगवती हेरादिभ्यो वटुकादिभ्यः आदर्श परिकलपयामि नमः

तपर्ण करना : एताभ्यो देवताभ्यो धूप दीप संकल्पातसिद्धरस्तु धूपो नमः दीपो नमः।

(हाथ जोडकर कलश देवताओं से माफी माँगना) — एतासां गणपति कलशमण्डल देवतानं अर्घ्यदानाद्यर्चन विधि सर्वः परिपूर्णोऽस्तु।

कलश को मधुपर्क चढ़ाना — (किसी कटोरी में दूध, दही, घी, शक्कर, शहद मिलाकर अर्पण करें) — हिरण्यगर्भः समवर्तताग्र भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामपुतेमां कस्मै देवाय हविषा विद्योम

चन्द्रमा मनसा जातः चक्षो सूर्यो अजायत, मुखात्—इन्द्रश्च अग्निश्च प्राणात्—आयुर अजायत, गणपति कलशमण्डल देवताभ्यः श्री भगवती हेरकादिभ्यः वटुकादिभ्यः मात्रा मधुपर्क चरुं निवेदयामि नमः।

दोनों हाथों से कलश पर कुसमाँजलि चढ़ाना — गणपति कलशमण्डल देवताभ्यः श्री भगवती हेरकादिभ्यः वटुकादिभ्य कुसुमाजलिं समर्पयामि नमः।

अष्टाँग प्रणाम करना — उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

पानी से संकल्प डालते पढ़े —अन्नं नमः अन्न नमः आज्यं आज्यं अद्यदिने अद्य यथा संकल्पात् सिद्धिरस्तु। अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं च यद्गतं तत् सर्व अच्छिद्रं सम्पूर्ण अस्तु एवमस्तु। **अपोशान डालना** — शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरिभस्रवन्तु नः। **(हाथ पर पानी डालकर फिर वापस बरतन में डालना) इस पानी की छीटें देते हुए पढ़ें** — गणपति कलशमण्डल देवताभ्यो, श्री भगवती अपोशानं नमः आचमीयनं नमः हेरकादिभ्यां वटुकादिभ्यः अपोशानं नमः आचमनीयं नमः।

(दक्षिणा डालना) — फिर शन्नोदेवी ... मन्त्र से पात्र में हाथ का पानी वापस डाल दें और यथाशक्ति दक्षिणा कलश को अर्पण करें — एताभ्यों गणपति कलशमण्डल देवताभ्यो, श्री भगवती, हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्यः दक्षिणायै तिलहिरण्यरजत निष्कर्णं ददानि।

और पैसे डालते हुए पढ़े – एताः देवताः सदाक्षिणन्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।

कलश को नैवेद्य चढ़ाना – अमृतेश–मुद्रया–अमृतीकृत्य अमृतम्–अस्तु–अमृतायतां नवैद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो – र्बाहुभ्यां पूणो हस्ताभ्यां – आददे महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै कलशदेवताभ्यः ब्रह्म विष्णु महेश्वर देवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु–पतये नारायणाय दुर्गायै त्रयम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वाता–दिभ्यः पितृगणदेवता–भ्यः। भगवते वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय सहस्र–नाम्ने विष्णवे लक्ष्मी–सहिताय नारायणाय। भवाय देवाय शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय पशुपतये देवाय उग्राय देवाय भीमाय देवाय, महादेवाय ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय। विनायकाय एकदन्ताय कृष्ण–पिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभसहिताय श्रीमहागणेशाय। क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूर वाहनाय सेनाधि–पतये कुमाराय भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्तश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय, नीलाश्वाय प्रत्सक्ष देवाय परमार्थ साराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय – आदित्याय भगवत्यै अमायै कामायै चार्वग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै श्री शारदा भगवत्यै श्री महाराज्ञी भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै

व्रीडा भगवत्यै वैख्वरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै गंगा भगवत्यै यमुना भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्ध लक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महा त्रिपुरसुन्दर्ये सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकरी – देव्यै क्षेमंकरी भगवत्यै सर्व शुत्र घातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये (आमुक भैरवाय) (आनन्देश्वर भैरवाय), इन्द्राय वज्रहस्तायअग्नये शक्ति हस्ताय, यमाय दण्ड–हस्ताय, नैऋर्तयैं खडगहस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजा हस्ताय कुवेराय गदाहस्ताय ईशानाय त्रिशूलहस्ताय ब्रह्मणे पद्महस्ताय विष्णवे चक्रहस्ताय अनन्तादिभ्यः अश्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः अग्न्या–दित्याभ्यां, वरुणचन्द्रमोभ्यां, कुमार भौमाभ्यां, विष्णु बुधुाभ्यां इन्द्रा बृहस्पतिभ्यां, सरस्वती शुक्राभ्यां, प्रजापति शनैश्चराभ्यां, गणपति राहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्म–ध्रुवाभ्यां, अनन्ता–गस्त्याभ्यां, ब्रह्मणे कूर्माय, ध्रुवाय अनन्ताय हरयै लक्ष्म्यै कमलायै शिखादिभ्यः पंच–चत्वारिशंत् वास्तोष्पति यागदेवताभ्यः ब्रह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गा क्षेत्रगणेश्वर देवताभ्यः, राका देवताभ्यः, त्रिका देवताभ्यः सिनीवाली देवताभ्यः, यामी देवताभ्यः, रौद्री देवताभ्यः वारुणी देवताभ्यः, ब्रहस्पत्यै देवताभ्यः, ओम् भूर्देवताभ्यः, ओम् भुवो देवताभ्यः, ओम् स्वर्देवताभ्यः ओम् भूर्भुवः स्वर्देवताभ्यः अखण्ड–ब्रह्माण्ड याग देवताभ्यः, धूर्म्य, उपधूर्म्यः, महागायत्र्यै, सावित्रयै सरस्वत्यै, हेरकादिभ्यो, वटुकादिभ्यः उत्पन्नम–अमृत दिव्यं प्राकक्षीरो दधि मन्थनात् अन्नम अमृतं रुपेण नैवेद्यं प्रतिग्रह्यताम्। ॐ तत्–सत्+ब्रह्म अद्य तावत्

तिथौ ... मासस्य ... पक्षस्य तिथो ... आत्मनो वांगमनः, कायोपार्जित पाप निवारणार्थं गणपति कलशमण्डल देवताभ्यो सन्तोशनार्थं सर्व कामना सिद्धयर्थं ओम् नमो नैवद्यं निवेदयामि नमः। **(चटू को स्पर्श करते हुए पढ़े) –** या काचित योगिनी रौद्रा सौम्या घोरेंतरा परा खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु में सदा, अनगूठे से तिलक लगाकर फिर अर्घ पुष्प चढायें, आकाश मातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः। अर्घो नमः पुष्पं नमः। **(इष्ट देवी के भाग को स्पर्श करते हुए पढ़े) –** इष्टदेवाय पायसं मोदकान् पक्वानं मिष्ठानं समर्पयामि नमः। **(क्षेत्रपालों के भाग को स्पर्श करते हुए पढ़े) –** योस्मिन निवसित क्षेत्रे क्षेत्रपालः सकिंकरा तस्मै निवेदयाम्यद्य बलं पानीय संयुतम **पानी सहित अर्घ चढ़ाये** क्षां क्षेत्रादिपतये अन्नम् नमः रां राष्ट्राधिपतये अन्नम नमः सर्वाः भय–वर प्रदो मयि पुष्टिं पुष्टिपति–र्दधातु।

कलश पर फूल चढ़ाते हुए पढ़े – ओम् तत्–विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्। तत् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोः यत परमं पदम्।

(नमस्कार करते हुए पढ़े) – आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वा–वस्थासु सर्वदा भगवन त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्। उभाभ्याम् जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

इति कलश पूजनं

कलश का विसर्जन (नवमी के दिन)

अर्घ और दो दर्भकाण्ड हाथ में लेकर, हाथ पर हाथ पहले की तरह रखकर पढ़े। ऊँ भू पुरुषं विसर्जयानि नमः। ऊँ भुव पुरुषं विसर्जयामि नमः। ऊँ स्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः। ऊँ भू भुवः स्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः। ऊँ भूः भवः स्व तत्सवितुवरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात् ।3। ऊँ सूर्यकरणाय विद्यमहि, भानुरत्तणाय धीमहि तन्नो राज्ञी प्रचोदयात् ।3। बीजत्रयाय विद्यहे, तत्प्रधानाथ धीमहि, तन : शक्तिः प्रयोदयात्। ।3।।

तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् ... महा गण्पतये – कुमारस्य, श्रिया सरस्वत्याः लक्ष्म्याः विश्वकर्मणः द्वेर्दिवतानां, प्रजापतेः ब्रह्मण कलशेदेवतानां, ब्रह्मविषणोमहेश्वर देवतानां, गणपति कलश मण्डल याग देवतानां।

हेरकादीनां वटुकादीनां आत्मनो वाङमना कायोपार्जित पाप निवारर्नाथम, शाप निवर्मथम श्री नव दुर्गा भगवती प्रीतार्थम, गणपति कलश देवता, क्षेत्रेश्वरदेवता पूजनं अछिद्रं समपूर्ण अस्तु, एवं अस्तु।

पानी से तपर्णः एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदकतर्पण नमः।

कलश को फूल चढाना: आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्यास्यस्य भक्षणे। शरीर यात्रा सिद्धयर्थं भगवन् क्षन्तुं अर्हसि। अपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा, भगवंस्त्वां प्रसन्नोस्मि रक्षमा शरणागतम्।

क्षेत्रपालो को अर्घ चढ़ाना: क्षमध्वंमम क्षेत्रेशा ददध्वं सुखसम्पदः। खगोपातालदिक् संस्थाः तुष्टा थान्तु स्वकं पदम्।

कलश को फिर पुष्प चढाना: आवाहन नैव जानामि न जानामि विसर्जनं पूजा भाग्यं न जानमि क्षम्यतां परमेश्वर।

प्रणाम करते हुए पढ़ें । उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः।

तपर्ण करना: नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये नमः, ... पृथिव्यै नमः ओषधीभ्यः। नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विषणवे बृहते कृणोमि। इत्य़तसोमव़ देवतानां सामीप्यं सार्ष्टितां सायुज्यं सलोकतां आप्नोति य एवं विद्वान स्वाध्यायम अधीते।

विसर्जन के दिन

कलश से मार्जन लेना:

उदकलशं उपनिधाय स्वस्त्यनं वाचयति। उत्त्ष्ठि ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहि उप प्रयन्तु मारुतः सदानव इन्द्र प्राशूभ्वा सचा, आर्य मायातु वृषभस्तु विष्मान् यन्ता वसूनि विधते तनूपाः, सहस्राक्षो गोत्र भिद्वाज/बाहुः अस्मासु देवो द्रविणं ददातु, ये ते अर्यमन्बहवो देव यानाः पनथानो राजन् दिव आचरन्ति तोभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेमी रक्षा च नो अधि ब्रूहि देव।।

(सब भक्तों को कलश की छींटे देते हुए पढ़े)

मंत्रार्था सफला सन्तु, पूर्णा सन्तु मनोर्थ, शत्रूनाम बुद्धि नाशसतु, मित्रानां उदयस्तव। आयू, आरोग्यं, ऐश्वर्यम् ईतत्त्रित्यं असतु, जीव त्वं शरदाशत्तं।।

अथ दुर्गापूजा

भद्रपीठ पर नवदुर्गा यन्त्र या दुर्गा भगवाती की मूर्ती रखकर उस पर पानी से संकल्प डालें

ॐ अस्य श्रीआसनशोधनमन्त्रस्य मेरूपृष्ठ ऋषिः,

सुतलं छनदः कूर्मो देवता आसनशोधने विनियोगः।

पृथ्वी को नमस्कार करें

पृथ्वि त्वया घृता लोका देवि त्वं विष्णुना घृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं करू चासनम्।।

दो दर्भ काण्ड पृथ्वी को आसन रखें

ध्रुवा द्योध्रवा पृथिवी ध्रुवासः पार्वती इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद्ध्रुवो राजा विशामसि।

पृथ्वी को तिलक एवं अर्घ पुष्प चढ़ाये

ॐ प्रीं पृथिव्यै आधारशक्तयै समालभनं गन्धोनमः अर्घोनमः पुष्पं नमः।।

"नमस्कार करना" शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये।।

अभिप्रेतार्थसिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैरपि। सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।। महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि। पाहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।। गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरूः साक्षात्महेश्वरः। गुरूरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः।। गुरवे नमः, परमगुरवे नमः, परमेष्ठिने गुरुवे नमः, परमाचार्याय नमः, आद्यसिद्धेभ्योनमः।। **"करन्यास"**: ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ह्रैं

अनामिकाभ्यां नमः, ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। **"षडङ्गन्यास**।। ह्रां हृदयायनमः ह्रीं शिरसे स्वाहा, ह्रूं शिखायै वषट्, ह्रें कवचाय ह्रौं नेत्राभ्यां वौषट् ह्रः अस्त्राय फट्।। **"चारों तरफ तिल फेंकना"**।। अपसर्पन्तु ते भूता ये दिवि भुवि संस्थिताः। ये दिक्षु विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।। **प्राणायामः**।। **"मुख और पौरों को पानी छिड़कना"**।। तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति।। मा नः शंस्यों अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।। **"पवित्र धारना"**।। वसोः पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमंसि सहस्रधारमयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्ति। **यज़मान को तिलक लगानाः** मात्रार्था सफला सन्तु, पूर्णा सन्तु मनोरथा, शत्रूणां बुद्धि नाशास्तु मित्राणां उदयस्तव, आयु आरोग्यं एश्वर्यं एतत्त्रितयं अस्तु ते, जीव त्वं शरदः शतम्।। **मोली बांधनाः** यदा बन्धन दाक्षाङ्यणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानः। तनमः आबध्नामि शतशारदाया आयुष्मान जरदाष्टियथसत। **अपने आप को गन्धादिक लगाना"**।। स्वात्मने शक्तिस्वरूपाय समालभनं गन्धोनमः, अर्घोनमः पुष्पं नमः।। **"दीप को"**।। स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्ति मिरापहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोऽयं परिकल्पितः।। **"धूप को"**।। वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।। **"सूरज को"**।। नमो धर्मनिधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।। **"पानी से संकल्प छोड़ना"**।। (पात्र में विष्टुर तथा अक्षत

पानी सहित रखें)। यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुभ्रातापि नो यत्र सुहृज्जनश्च। न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिस्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।। स्वात्मने शक्तिस्वरूपाय दीपधूप–सङ्कल्पात्सिद्धिरस्तु दीपो नमः धूपो नमः।। ॐ तत्सदब्रह्माऽद्यतावत्तिथावद्यामुकमासस्यामुकपक्षास्य तिथावमुकायामात्मनो वाङ्गमनःकायोपार्जित – पापनिवारणार्थं श्रीदेवी प्रीत्यर्थं अमुककांमनासिद्ध्यर्थं भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिकाभगवत्यै श्रीशारदाभगवत्यै श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै श्रीज्वालाभगवत्यै व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै गङ्गाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्य, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्यै दुर्गादेव्यै भवान्यै दीपोनमः धूपोनमः। **"अपसव्येन"** । ॐ तस्त्सदब्रह्माद्यतावत्०। पित्रे पितामहाय, प्रपितामहाय, मात्रे पितामह्यै प्रपितामह्यै, मातामहाय वृद्धप्रमातामहाय, मातामह्यै प्रमातामह्यै, वृद्धप्रमातामह्यै इत्यादिभ्यः दीपः स्वधा धूपः स्वधा।। **"सव्यैन"**।। **"विष्टरसहित पानी वाले पात्र में तीन बार फूल और गन्ध छोड़ना"**।। संवयः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तुवः।1। संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः।।2।। संय्यावः प्रियास्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः आत्मावो अस्तु संप्रियः

संप्रियास्तन्वो मम।।3।। **"यह पानी प्रतिमा पर छोड़ना"**। अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव; मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव, बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणन्ददातु तेन जीव।। **"देवी का न्यास" (एक दर्भ काण्ड से करें)** ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः,ह्रं मध्यमाभ्यां नमः ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ह्रौं कनिष्टाकाभ्यां नमः, ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः **"षडङ्गन्यास"** ह्रां हृदयायनमः ह्रीं शिरसे स्वाहा, ह्रूं शिखाये वषट् ह्रें कवचाय हुँ, ह्रौं नेत्राभ्यां वौष्ट् ह्रः अस्त्राय फट्।। **अक्षत युक्त दो दर्भकाण्ड हाथ में रख कर (बायां हाथ दायें कलाई के उपर रखें)। आवाह्न करें।** बीजत्रयाय विद्महे, तत्प्रधानाय धीमहि, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।3। ॐ तत्सद्ब्रह्माऽद्यतावत्तिथो – वतद्यामुकमासस्यामुकपक्षस्य तिथावमुकायामात्मनो वाङ्गमनःकायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीदेवी प्रीत्यर्थं अमुककांमनासिद्ध्यर्थं भगवत्याः अमायाः कामायाः चार्वङ्ग्याः टङ्कधारिण्याः तारायाः पार्वत्याः यक्षिण्याः श्रीशारिकाभगवत्याः श्रीशारदाभगवत्याः श्रीमहाराज्ञी भगवत्याः श्रीज्वालाभगवत्याः व्रीढा भगवत्याः, वैखरी भगवत्या, वितस्ता भगवत्याः, गङ्गाभगवत्याः यमुनाभगवत्याः कालिकाभगवत्या सिद्धलक्ष्म्याः, महालक्ष्म्याः, महात्रिपुरसुन्दर्याः शैलपुत्र्याः, ब्रह्मचारिण्याः, कूष्माण्ड्याः, चण्डघंण्टायाः स्कन्दमातुः, सिद्धिदायाः, महागौर्याः कालरात्र्याः, कात्यायन्याः नवदुर्गाभगवत्याः सहस्रनाम्न्याः दुर्गादेव्याः भवान्याः। आत्मनो वाङ्मनः

कायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीदेवीप्रीत्यर्थं देवीपूजनमऽर्चामहं करिष्ये ॐ कुरुष्व।। **"कंधे के उपर से तिल फेंकके दो दर्भ काण्ड डालकर आसन देना"**।। आगच्छ त्वममादेवि! भक्ताऽशयनिवासिनी!! प्रीत्या दत्तमासनं ते स्वास्यतां मम प्रीतये।। भगवत्याः आमायाः कामायाः चार्वङ्ग्याः टङ्कधारिण्याः तारायाः पार्वत्याः यक्षिण्याः श्रीशारिकाभगवत्याः श्रीशारदाभगवत्याः श्रीमहाराज्ञीभगवत्याः श्रीज्वालाभगवत्याः श्री व्रीडाभगवत्याः वैखरीभगवत्याः वितस्ताभगवत्याः गङ्गाभगवत्याः यमुनामभगवत्याः कालिकाभगवत्याः सिद्धलक्ष्म्याः महालक्ष्म्याः महात्रिपुरसुन्दर्याः शैलपुत्र्याः, ब्रह्मचारिण्याः, कूष्माण्डयाः, चण्डघण्टायाः, स्कन्दमातुः, सिद्धिदायाः, महागौर्याः, कालरात्र्याः, कात्यायन्याः नवदुर्गाभगवत्याः सहस्रनाम्न्याः दुर्गादेव्याः भवान्याः।। इदमासनं नमः।। **"आवाहन करना"**।। **दाहिने हाथ में दो दर्भ काण्ड और अक्षत रखे ओर बाईयाँ हाथ दाहिनी कलाई पर रखें।** भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिकाभगवत्यै श्रीशारदाभगवत्यै श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै श्रीज्वालाभगवत्यै श्री व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै गङ्गाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै। कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे।, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्यै दुर्गादेव्यै भवान्यै। युष्मान्वः पूजयामि ॐ पूजय। **हाथ में रखा अक्षत निर्माल्य में**

फेंक कर, दर्भ के साथ नया अक्षत रखें। भगवतीं अमां कामां चार्वङ्गीं टङ्धारिणीं तारां पार्वती यक्षिणीं श्रीशारिकाभगवतीं श्रीशादाभगवतीं श्रीमहाराज्ञीभगवतीं श्रीज्वलाभगवतीं व्रीडाभगवतीं वैखरीभगवतीं वितस्ताभगवतीं गङ्गाभगवतीं यमुनाभगवतीं कालिकाभगवतीं सिद्धलक्ष्मीं महालक्ष्मीं महात्रिपुरसुन्दरी शैलपुत्रीं, ब्रह्मचारिणीं कूष्माण्डीं, चण्डघण्टां, स्कन्दमातंर, सिद्धदां, महागौरी, कालरात्रीं, कात्यायनीं, नवदुर्गा –भगवतीं सहस्रनाम्नीं दुर्गादेवीं भवानी आवाहयिष्यामि ॐ आवाहाय।। श्रीशारिके त्रिपुरसन्दरि शर्मसिन्धो ज्वालेऽत्र राज्ञि वरदेऽखिलविश्वमातः। शर्वार्धदेहनिलये धिपणे मदीयां पूजामिमां स्वपरिवारयुता गृहाण। हे देवि त्वं पराशक्ते भक्तानुग्रहकारिणि। अस्मद्दयानु –रोधेन सान्निधिं कुरु चात्र भोः।।3।। इत्याहूय च गायत्रीं त्रिःसमुच्चार्य तत्ववित्। मनसा चिन्तितैर्द्रव्यैर्देवीमात्मनि पूजयेत्।। तेजोरूपां ततः क्षिप्तवा प्रतिमाया पुनर्यजेता।। **दर्भ और अक्षत हाथ से छोड़ दें।।** यवान्विकीर्य **(कंधों से जव दाने फेंकें)।। प्राणायामः।** पाद्यार्थमुदकं नमः।। **"पानी हाथ से पात्र में छोड़ना"।।** शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभि स्रवन्तु नः।। **"यह द्रव्य उसमें छोड़ना"।।** (लाई, आरी के पत्ते, कुंकुम) लाजाश्च कुङ्कुमं चैव सूर्वौषधिसमन्वितम्। दर्भाङ्कुरं जलं चैव पञ्चाङ्गपाधलक्षणम्।। भगवति पाद्यं पाद्यम्।। एहि कामे कामहर्त्रि स्वेष्टकामदुघे शिवे। भक्तया पाद्यं मया दत्तं क्षाल्यतां पादपीठिकाम्।। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै

टङ्कधारिंण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिकाभगवत्
श्रीशारदाभगवत्यै श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै श्रीज्वालाभगवत्यै श्र
व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै गङ्गाभगवत्
यमुनाभगवत्यै । कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म
महात्रिपुरसुन्दयै शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै
चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्य, कालरात्र्यै
कात्यायन्यै नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्यै दुर्गादेव्यै भवान्यै
पाद्यनमः । शेषं निवारयेत् । **(पात्र में बचा हुआ जल निर्माल्य म**
डाल दें)। पुनः शन्नदिवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये
शंय्योरभि स्रवन्तु नः ।। **"यह द्रव्य उसमें छोड़ना"** ।। आप
क्षीरं कुशाग्रणि घृतं च दधि तण्डुलाः यवाः । सिद्ध्यार्थकाश्चेति
ह्यर्घ्यमष्टाङ्गमुच्यते ।। **(दूध दही, घी, बेर/सरशप, जव,**
चावल) ।। भगवति अर्घ्यं अर्घ्यं । चार्वङ्गित्वामिहागच्छ सता
चार्वङ्गदायिनि । मयाऽऽनीतमर्घ्यमिदं शुद्ध्येतां मुखहस्तकौ ।
भगवति अमायै, कामायै, चार्वङ्गि टङ्कधारिणी तारे, पार्वति,
यक्षिणि, श्रीशारिकाभगवति श्रीशारदाभगवति,
श्रीमहाराज्ञीभगवति, श्रीज्वालाभगवति व्रीडाभगवति,
वैखरीभगवति, वितस्ताभगवति गंगा भगवति, यमुना भगवति,
कालिका भगवति सिद्धलक्ष्मीः, महालक्ष्मीः, महात्रिपुरसुन्दरि
शैलपुत्रि, ब्रह्मचारिणि, कूष्माण्डि, चण्डघण्टे, स्कन्दमातः
सिद्धिदे, महागौरि, कालरात्रि, कात्यायनि, नवदुर्गाभगवति,
सहस्रनाम्नि दुर्गादेवि भवानि इदं वोऽर्घ्यं नमः ।। **साफ पानी से**
आचमण देना। टङ्काधारिणि तवमेहि दुष्टान्
टङ्कैर्विधारिणि । गृहाणाचमनं दत्तं मुखान्तर्मलमृष्टये ।

भगवत्यै आमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टङ्धार्ण्यै, तारायै, पार्वत्यै यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनाभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यान्यै नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्यै दुर्गादेव्यै भवान्यै आचमनीयं नमः **और भी साफ पानी डालें**।। आगच्छ तारे सथानेऽस्मिन् भवसागरतारिणि। मलोत्थापनकं देहात्मन्त्रस्नानं च स्वीकुरू।। भगवत्यै अमायै, कामायै, चार्वङ्ग्रै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, श्री व्रीडाभगवत्यै, वेखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनाभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्य, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिणयै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्यै दुर्गादेर्व्य भवान्यै मन्त्रस्नानीयं नमः।। **(माता के स्नान के लिए जल के बाल्टी में यह द्रव्य अच्छी मात्रा में डाल दें:, सिन्दूर, लाई, दूध, दही, घी, शक्कर, वाई, कौठ, कांफूर, केसर, छोटी इलाइची, अगर, थंगर, शण्ख पुष्प, कुंकुम)**।। लाजागन्धवचः कुष्ठं बालुकं शङ्खपुष्पकम्। कुङ्कुमागुरुकर्पूरान स्नाने देव्याः प्रकल्पयेत्।। (कुन्दमपि च)

।। तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्ती वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसितरसे नमः।।1।। अग्ने तवं पारया नव्यो अस्मान्स्वास्तिभिरति दुर्गाणि विश्वां पूश्च पृथ्वीं बहुला न उर्वी भवातोकाय तनयाय शंय्योः।।2।। विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुं न नावा दुरितातिपर्षि। अग्ने अन्निवन्नमसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम्।।3।। पृतनाजितं सहमानमुग्रमऽग्निं हुवेम परमात्सधस्यात्। स नः पर्षयतिदुर्गाणि विश्वा क्षामाद्देवो अति दुरितात्याग्निः।।4।। प्रत्नोहि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि। स्वां चाग्ने तन्वे पिप्रयस्वार्मभ्यं च सौभगमा यजस्व।।5।। यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा। चतस्र ऊर्जं दुदुहे पयांसि क्वस्विदऽस्याः परमं जगाम्।।6।। देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्ठुतैतु।।7।। प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती धीनामवित्र्यवतु।।8।। ॐ गायत्र्यै नमः ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धी महि, धियो यो नः प्रचोदयात। ॐ सरस्वतिये नमः ॐ भूर्भवः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धी महि, धियो यो नः प्रचोदयात, ॐ सावित्रेय नमः ॐ भूर्भवः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धी महि, धियो यो नः प्रचोदयात।। जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयी निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्याग्निः।।90।। भगवत्ये अमाये, कामाये, चार्वङ्ग्यै, टङ्कधारिण्यै, ताराये, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिका भगवत्यै, श्री शारदा भगवत्यै, श्रीज्वाला, श्री व्रीडा

भगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्मयै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्य, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै नवदुर्गाभिगवत्यै सहस्रनाम्न्यै दुर्गादेव्यै भवान्यै आष्टौ स्नानानि नमः।। ॐ नमो देवेभ्यः। (**"कठोपवीती"**) स्वाहा ऋषिभ्यः।। (**"अपसव्येन"**) स्वधा पितृभ्यः। "सव्येन" आ ब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत् तृष्यतु तृष्यतु तृष्यतु एवमंस्तु।। मन्त्रगोडकः **फिर डालें पानी 'ऐंक्लींसौः हसरक्षमलवयऊंहीश्रींरां' इस मंत्र से सात बार मंत्रित करके अपने माथे तक लेके अमृत से 'भरा हुआ' ध्यान करके देवी के सिर पर छोड़ना। यह मन्त्रगुडक है।।** (अरात्रिका निकालना) **बायें करतल में अक्षत युक्त पानी रखके आरात्रिका निकालना।"** गृहणन्तु चण्डिकाभक्ता भूताः प्रासादबहयगाः। पश्च्वंभूतात्मकाः प्रेतास्ते तृप्यन्तु सदा वौषट्। (**देवी के पादों का जल नेत्रें को मलना**)।। एहि देवी पराशक्ते भगवत्यमलाशये। प्रकाशय परं तेजो नेत्रस्पर्शेन वैष्णवि। उतिष्ठ देहि शरणं भुवि चित्रमाये ह्युत्तिष्ठ दुष्टकृतदुःखततिं कृणीहि। उत्तिष्ठ भक्तवरदायकमऽक्षि धेहि ह्युत्तिष्ठ शोकभयकुञ्जमिदं लुनीहि।।

देवी के स्नान का मल पानी से साफ करते हुये स्तोत्र पढ़े।

अथ पञ्चस्तव्यामऽम्बस्तवश्चतुर्थः

यामाऽऽमनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं
विद्येति यां श्रुतिरहस्यविदो वदन्ति ।
तामऽर्धपल्लवितशङ्कररूपमुद्रां
देविमऽनन्यशरणः शरणं प्रपद्ये ।।1।।

अम्ब! स्तवेषु तव तावदऽकर्तृ काणि
कुण्ठीभवन्ति वचसामऽपि गुम्फनानि ।
डिम्बस्य में स्तुतिरसावऽसमञ्जसापि
वात्सल्यनिघ्नहृदयां भवतीं धिनोति ।।2।।

व्योमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुलेखा–
रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति ।
निःष्यन्दमानसुखबोधसुधास्वरूपा
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम् ।।3।।

आविर्भवत्पुलकसन्ततिभिः शरीरै–
र्निःष्यन्दमानसलिलैर्नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गदपदाभिरुपासते ये
पादौ तवाम्ब! हृदयेषु त एव धन्याः ।।4।।

वक्त्रं यदुद्यतमऽभिष्टुतये भवत्या –
स्तुभ्यं नमो यदपि देवि! शिरः करोति!

चेतश्च यत्त्वयि परायणमम्ब! तानि
कस्यापि कैरपि भवन्ति तपोविशेषैः । ।5 । ।

मूलालवालकुहरादुदिता भवानि!
निर्भिद्य षट्सरसिजानि तडित्लतेव ।
भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु–
निःष्यन्दमानपरमामृततोयरूपा । ।6 । ।

दग्धं यदा मदनमेकमऽनेकधा ते
मुग्धः कटाक्षविधिरङ्कुर्यांचकार ।
धत्ते तदाप्रभृति देवि! ललाटनेत्रं
सत्यं हिंरयेव मुकलीकृतमिन्दुमौलिः । ।7 । ।

अज्ञातसम्भवमनाकलितान्ववायं
भिक्षुं कपालिनमवाससमद्वितीयम् ।
पूर्व परग्रहणमङ्गलतो भवत्याः
शुम्भुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये । ।8 । ।

चर्माम्बरं च शवभस्मविलेपनं च
भिक्षाटनं च नटनं च परेतभूमौ ।
वेतालसंहतिपरिग्रहता च शम्भोः
शोभां बिभर्ति गिरिजे! तव साहचर्यात् । ।9 । ।

कल्पोपसंहरणकेलिषु पण्डितानि
चण्डानि खण्डपरशोरपि ताण्डवानि।
आलोकनेन तव कौमलितानि मात –
र्लास्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै।।10।।

जन्तोरपश्चिमतनोः सति कर्मसाम्ये
निःशेषपाशपटलच्छिदुरा निमेषात्।
कल्यानि! दैशिककटाक्षसमाश्रयेण
कारुण्यतो भवसि शाम्भवेददीक्षा।।11।।

मुक्तविभूषणवती नवविद्रुमाभा
यच्चेतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या
एकः स एव भुवनत्रयसुन्दरीणां
कन्दर्पताः व्रजति पञ्चशरीं विनापि।।12।।

ये भावयन्त्यमृतवाहिभिरंशुजालै –
राप्यायमानभुवनाममृतेश्वरीं त्वाम्।
ते लङ्घयन्ति ननु मातरऽलङ्घयनीयां
ब्रह्मादिभिः सुरवरैरपि कालकक्ष्याम्।।13।।

यः स्फाटिकाक्षगुणपुस्तककुण्डिकाढ्यां
व्याख्यासमुद्यतकरां शरदिनदुशुभ्राम्।

पद्मासानां च हृदये भवतीमुपास्ते
मातः स विश्वकविताकिर्कचक्रवर्ती । ।14 । ।
बर्हावतस युतबर्बरकेशपाशां
गुञ्जावलीकृतघनस्तनहारशोभाम् ।
श्यामां प्रवालवदनां सुकुमारहस्तां
त्वामेव नौमि शवरीं शवरस्य जायाम् । ।15 । ।

अर्धेन किं नवलतालतेन मुग्धे!
क्रींत विभोः परुषमर्धमिदं त्वयेति ।
आलीजनस्य परिहासवचांसि मन्ये
मन्दस्मितेन तव देवि! जडी भवन्ति । ।16 । ।

ब्रह्माण्ड बुद्बुदकदम्बकसंकुलोऽयं
मायोदधिर्विविधदुःखतरङ्गमालः ।
आश्चर्यमम्ब! झटिति प्रलयं प्रयाति
त्वद्ध्यानसन्ततिमहावडवामुखाग्नौ । ।17 । ।

दाक्षायणीति कुटिलेति गुहारणीति
कात्यायनीति कमलेति कलावतीति ।
एका सती भगवती परमार्थतोऽपि
संदृश्यसे बहुविधा ननु नर्तकीव । ।18 । ।

आनन्दलक्षणमनाहतनाम्नि देशे
नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे।
प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं
शंसन्ति नेत्रसलिलैः पुलकैश्च धन्याः।।19।।

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मरुचौ रुचिस्त्वं
त्वं चेतनासि पुरुषे पवने बलं तवम्।
त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनि त्वमूष्मा
निःसारमेव निखिलं त्वदृते यदि स्यात्।।20।।

ज्योतींषि यद्दिवि चरन्तियदन्तरिक्षं
सूते पयांसि यदहिर्धरणीं च धत्ते।
यद्वाति वायुरनलो यदुदर्चिरास्ते
तत्सर्वमम्ब! तव केवलमाज्ञयैव।।21।।

सङ्कोचमिच्छसि यदा गिरिजे! तदानीं
वाक्तर्कयोस्त्वमसि भूमिरनामरूपा।
यद्वा विकासमुपयासि यदा तदानीं
त्वन्नामरूपगणनाः सुकरीभवन्ति।।22।।

भोगाय देवि भवतीं कृतिनः प्रणम्य
भ्रूकिङ्करीकृतसरोजगृहासहस्त्राः।

चिन्तामणिप्रचयकल्पितकेलिशैले
कल्पद्रुमोपवन एव चिरं रमन्ते ।।23।।

हन्तुं त्वमेव भवसि त्वदधीनमीशे
संसारतापमखिलं दयया पशूनाम्।
वैकर्तनीकिरणसंहतिरेव शक्ता
घर्मं निजं शंयितुं निजयैव वृष्ट्या।।24।।

शक्तिः शरीरमधिदैवतमन्तरात्मा
ज्ञानं क्रिया करणमासनजालमिच्छा।
ऐश्वर्यमायतन्मावरणानि च त्वं
किं तन्नयद्भवसि देवि शाशङ्कमौलेः।।25।।

भूमौ निवृत्तिरुदिता पयसि प्रतिष्ठा
विद्याऽनले मरुति शान्तिरतीतशन्तिः।
व्योम्नीति याः किलकलाः कलयन्ति विश्वं
तासां विदूरतरमम्ब! पदं त्वदीयम्।।26।।

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं
नाङ्गीकरोति हृदयेषु जगच्छरण्ये।
तावद्विकल्प जटिलाः कुटिलप्रकारा–
स्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति।।27।।

यद्देवयानपितृयानविहारमेके
कृत्वा मनः करणमण्डलसार्वभौमम् ।
याने निवेश्य तव कारणपञ्चकसय
पर्वाणि पार्वति नयन्ति निजासनत्वम् । ।28 । ।

स्थूलासु मूर्तिशु महीप्रमुखासु मूर्तेः
कस्याश्चनापि तव वैभवमम्ब यस्याः ।
पत्या गिरामपि न शक्यत एव वक्तुं
सासि स्तुता किल मयेति तितिक्षितव्यम् । ।29 । ।

कालाग्निकोटिरुचिमम्ब षडऽध्वशुद्धा–
वाल्पावनेषु भवतीममृतौघवृष्टिम् ।
श्यामां घनस्टतनटां सकलींकृतौ च
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति । ।30 । ।

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्ब केचि–
दानन्दमेव कतिचित्कतिचिच्च मायाम्
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम
साक्षादपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव । ।31 । ।

कुवलयदलनीलं बर्बरस्निग्धकेशं
पृथुतरकुचभाराक्रान्तकान्तावलग्नम् ।

किमिह बहुभिरुक्तैस्त्वत्स्वरूपं परं नः
सकलभुवनमातः सन्ततं सन्निधत्ताम्।।32।।

''देवी को बिछाना''।। आसानाय नमः, सिंहासनाय नमः, शवासनाय नमः, मुञ्चासनाय नमः, ज्ञानासनाय नमः।।
''अनुलेपन करना''।। सृष्टेरधिष्ठितिभुवः किमु चासनं ते, नानाचमत्कृति – कृतः किमु भूषणं वा।।
किं देयमस्ति भुवनासुप्रदायिकाया वाच्यं किमस्ति स्वयमेव त्रयीजनन्याः।। **''ऐसे ही देवीस्तोत्र पढ़ते हुए दीवी को चन्दनादि द्रव्यों से अनुलेपन करना''**।।

अजानन्तो यान्ति क्षयम् अवशम् अन्योन्य कलहै।
अमी मायाग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः
जगत् मातर जन्म ज्वर भय तमः कौमुदिं वयं।
नमस्ते कुर्वाणाः शरणम उपयामो भगवतीम्।।

ददातीष्टान्–भोगान क्षपयति रिपून् हन्ति विपदो,
दहत्याधीन व्याधीन शमयति सुखानि प्रतनुते,
हठात् अन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टीष्ट विरहं।
सकृत् ध्याता देवी किम् इव निर् अवद्यंन कुरूते।।

पिता माता भ्राता सुहृत् अनुचरः सद्म गृहिणी।
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां विजहति।
तदा में भिन्दाना सपदि भय मोहान्ध तमसं
महाज्योत्सने! मात–भर्व करुणया सन्निधिकरी।।

भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणा,
मितिस्तोतं वांञ्छन्कथयति भवानि त्वमिति यः।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसा युज्य पदवीं
मुकन्द ब्रह्मन्द्र स्फुट मुकुटनीरा जितपदम्।।

त्वदन्य पाणिभ्याम–भय वरदो दैवत गणः।
त्वमेका नैवासि प्रकटित वरा भीत्य भिनिया।
भयात त्रातुं दातुं वरमपि च वाञ्छा समधिकं,
शरणये लोकानां त्व हि चरणावेव निपुणौ।।

न जानामि ध्यानं तव चरणयो प्रीतिजननं।
न जानामि न्यासं मननं अपि मार्तन गिरिजे।
तदे तद् क्षन्तव्यं न खलु स्तव रोषः समुचितं
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।

"वस्त्र पहनाना" एहि पार्वति शैलोत्थे वस्त्रं त्वग्रोमकोशजम् । नानावर्णं मयानीतं व्रयतां चारु भावजम् । भगवत्यै अमायै, कामायै, चार्वङ्ग्यै टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनाभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गाभगवत्यै, सहस्रनाम्न्यै दुर्गादेव्यै भवान्यै वस्त्रं परिकल्पयामिनमः ।। **"जञू पहनाना"** ।। यक्षिण्येहि यज्ञ मातः सुवर्णतन्तुनिर्मितम् । त्रिगुणात्म यज्ञसूत्रं मयानीतं सुवीष्ट्यताम् । भगवतये अमायै, कामायै, चार्वङ्ग्यैटङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, श्री व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनाभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिंण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्ये दुर्गादेव्यै भवान्ये यज्ञोपवीतं नमः **"गन्ध चढ़ाना"** ।। शारिके त्वं विद्रुमाभे चन्दनागुरुकुङ्कुमैः । संस्कृतं तिलकं, भाले क्रियतां मम प्रीतये । भगवत्यै, अमायै, कामायै, चार्वङ्ग्यै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै,

श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, श्री व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनामभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्ये दुर्गादेव्यै भवान्ये समालभनं गन्धोनमः।। (लेपं निवारयेत्)।। सौभाग्यसूत्र (हार कंकण) पहनना।

हार कंकण केयूर मेखला कुण्डलादिभि।

रत्नाढयं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।।

कज्जल लगाना :

चक्षुर्ल्यां कजजलं रम्ये सुभगे शान्तिकारिके।

कपूर्र जयोतिरुतपन्ना गृहाण परमेश्वरी।।

हे शारदे शास्त्रदात्रि दूर्वार्घबिल्लव – पुष्पवत्। नानाविधं पुष्पजाति प्रीर्तयानीतं सुमर्द्धिताम्।। **(ध्रुवा, बेलपत्री और फूल चढ़ाना)** ॐ गांगणपतये नमः, भैंभीमराजायनमः, कांकुमारायनमः जुंजाङ्गलेश्वरायनमः। ओलं इन्द्रायनमः ॐ ह्रीं अग्नये नमः ॐ नमः ह्रींधर्मराजायः, **सब नामों के साथ नमः जोडदें** नैर्ऋतये, वरुणाय, वायवेनमः, कुवेराय, ईशानायनमः, ब्रह्मणे, अनन्तायनमः। धूम्रार्चिषेनमः, ऊष्माय, जवलिन्यै, ज्वालिन्यै, विस्फुलिङ्गन्यै, सुश्रिये, स्वरूपाय, कपिलायै, हव्यवाहनाय, कव्यवाहानाय, दशकलात्मने

वह्नयेनमः। तपिन्यैन्मः, तापिन्यै नमः, धूम्रायै, मरीच्यै, जुलिन्यै, तथ्यै, सुषुम्णायै, भोगदायै, विश्वायै, बोधिन्यै, धारिण्यै, क्षमायै, द्वादशकलात्मनेसूर्यायनमः। अमृतायै, आनन्दायै, पूषायै, तुष्ट्यै, रत्यै, धृत्यै, शिशिन्यै, चण्डिकायै, कान्त्यै, ज्योत्स्नायै, श्रियै, प्रीत्यै, अङ्गदायै, पूर्णायै, पूर्णामृतायै, षोडशकलात्मनेशशिनेनमः। अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्तया समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।। ॐ गुरवे नमः, परमगुरवेनमः, परमेष्ठिगुरवेनमः। अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्तया समर्पये तुभ्यं **द्वतीयावरणार्चनम्**।। अनन्तनागराजाय नमः, वासुकि नागराजाय नमः, कार्कोट नागराजाय नमः, शङ्खपाल नागराजाय नमः, तक्षक नागराजाय नमः, कलिक नागराजाय नमः, पद्म नागराजाय नमः, महा पद्म नागराजाय नमः, अभीष्टसिदिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्तया समर्पये तुभ्यं **तृतीयावरणार्चनम्**। असिताङ्गभैरवयुतब्राह्मयेनमः, रुरुभै० वेष्णव्यै० चण्डभै० रुद्राण्यै० क्रोधमै०, नारसिंह्यै० उन्मत्तभै० कौमार्यै० भीषणभै० चामुण्डायै० कपालेश्वरभै० वाराह्यै०, संहारभै० महालक्ष्म्यै नमः।। अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले। भक्तया समर्पये तुभ्यं **चतुर्थावरणार्चनम्**। दुर्गायैनमः, भगवत्यैनमः, अमायैनमः, कामायैनमः, चार्वग्यैनमः, टङ्कधारिणयैनमः, तारायैनमः, पार्वत्यैनमः, यक्षिण्यैनमः, श्रीशारिकायैनमः, श्रीशादायैनमः, श्रीमहाराज्ञैनमः, श्रीज्वालायैनमः, व्रीडायैनमः, वितस्तायैनमः, गङ्गायैनमः, यमुनायैनमः, कालिकायैनमः,

सिद्धलक्ष्म्यैनमः, महात्रिपुरसुन्दर्यैनमः। अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्तया समर्पये तुभ्यं **पञ्चमावरणार्चनम्**।। गायत्र्यैनमः। सावित्र्यैनमः, सरस्वत्यै, बालायै, भुवनेश्वर्यै।। अभीष्टसिद्धिं में देहि शरणागतवत्सले भक्तया समर्पये तुभ्यं **षष्ठावरणार्चनम्**।। वज्रायनमः, शक्तये, दण्डाय, खड्गाय, पाशाय, ध्वजाय, गदायै, त्रिशूलाय, पद्माय, चक्रायनमः।। अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले भक्तया समर्पयै तुभ्यं, **सप्तमावरणार्चनम्**।। अग्न्यादित्याभ्या नमः, वरुणचन्द्रमोभ्यां, कुमाररभौमाभ्यां, विष्णुबुधाभ्यां, इन्द्राबृहस्पतिभ्यां, सरस्वतीशुक्राभ्यां, प्रजापतिशनैश्वराभ्यां, गणपतिराहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्तागस्त्याभ्यां नमः।। पराशक्तये नमः, चिच्छक्तये नमः, सहस्रनाम्न्यै नमः, दुर्गादेव्यै नमः, भवान्यै अर्घोनमः पुष्पं नमः।। **(अर्घ पूष्प चढ़ाना चालू रखें)**

ओं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ओं नमस्त्रिपुरसुंदरि नमों नमः, **(प्रत्येक नाम से पहले ऐं 'ह्रीं श्रीं' और नाम के बाद नमो नमः जोड़ें)** हृदयदेविनमों नमः, शिरोदेवि नमों नमः, शिखादेवि नमों नमः, कवचदेवि नमों नमः, नेत्रदेवि नमों नमः, अस्त्रदेवी नमों नमः, कामेश्वरि नमों नमः, भगमालिनि नमों नमः, नित्यकिल्न्ने नमों नमः, भेरुंडे नमों नमः, बह्निवासिनि नमों नमः, महावज्रेश्वरि नमों नमः, शिवदूति नमों नमः, त्वरिते नमों नमः, कुलसुंदरि नमों नमः, नित्ये नमों नमः, नीलपताके नमों नमः, सर्वमंगले नमों नमः, जवालामालिनि नमों नमः, चित्रे नमों नमः, महानित्ये नमों नमः, परमेश्वर–परमेश्वरि नमों

नमः, मित्रेशमयि नमों नमः, षष्टीशमयि नमों नमः, उड्डीशमयि नमों नमः, चर्यानाथमयि नमों नमः, लोपामुद्रामयि नमों नमः, अगसित्यमयि नमों नमः, कालतापनमयि नमों नमः, धर्मचार्यमयि नमों नमः, मुक्तकेशीश्वरमयि नमों नमः, दीपकलानाथमयि नमों नमः, विष्णुदेवमयि नमों नमः, प्रभाकरदेवमयि नमों नमः, तेजोदेवमयि नमों नमः, मनोजदेवमयि नमों नमः, कल्याणदेवमयि नमों नमः, वसुदेवमयि नमों नमः, रत्नदेवमयि नमों नमः, श्रीरामानंदमयि नमों नमः, अणिमासिद्धे नमों नमः, लघिमासिद्धे नमों नमः, गरिमासिद्धे नमों नमः, महिमासिद्धे नमों नमः, इशितवसिद्धे नमों नमः, वशितवसिद्ध नमों नमः, प्रकाम्यसिद्धे नमों नमः, भुक्तिसिद्धे नमों नमः, इच्छासिद्धे नमों नमः, प्राप्तिसिद्धे नमो नमः सर्वकामसिद्धे नमों नमः, ब्राह्मि नमों नमः, माहेश्वरि नमों नमः, कौमारि नमों नमः, वैष्णवि नमों नमः, वाराहि नमों नमः, माहेंद्रि नमों नमः, चामुंडे नमों नमः, महालक्ष्मि नमों नमः, सर्वसंक्षोभिणि नमों नमः, सर्वविद्राविणि नमो नमः सर्वाकर्षिणि, सर्ववशंकरि, सर्वोन्मादिनि, सर्वमहांकुशे, सर्वखोचरि सर्वबीजे, सर्वयोने, सर्वत्रिखंडे, त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि नमों नमः, प्रकटयोगिनि, कामाकर्षिणि नमों नमः, बुद्धयाकर्षिणि, अहंकाराकर्षिणि, रूपाकर्षिणि, रसाकर्षिणि, गंधाकर्षिणि, चित्ताकर्षिणि, स्पर्शाकर्षिणि नमों नमः, रूपाकर्षिणि नमों नमः, रसाकार्षिणि नमों नमः, गंधाकर्षिणि नमों नमः, चित्ताकर्षिणि नमों नमः, धैर्याकर्षिणि नमों नमः, स्मृत्याकर्षिणि नमों नमः, नामाकर्षिणि

नमों नमः, बीजाकर्षिणि नमों नमः, आत्माकर्षिणि नमों नमः, अमृताकार्षिणि नमों नमः, शरीराकर्षिणि नमों नमः, सर्वाशापरिपूरक चक्रस्वामिनि नमों नमः, गुप्तयोगिनी नमों नमः, अनंगकुसुमे नमों नमः, अनंगवेगिनि नमों नमः, अंनगमेखले नमों नमः, अनंगमालिनि नमों नमः, सर्वसंक्षोभणे – चक्रस्वामिनि नमों नमः, गुप्ततरयोगिनि नमों नमः, सर्वसंक्षोभिणि नमों नमः, सर्वविद्राविणि नमों नमः, सर्वाकर्षिणि नमों नमः, सर्वाह्लदिनि नमों नमः, सर्वसम्मोहिनि नमों नमः, सर्वस्तंभिनि नमों नमः, सर्वजृंभिणि नमों नमः, सर्ववशंकरि नमों नमः, सर्वरंजनि नमों नमः, सर्वोमादिनि नमों नमः, सर्वाथसाधिके नमों नमः, सर्वसंपत्तिपूरणियै नमों नमः, सर्वमंत्रमयि नमों नमः, सर्वद्वंद्वक्षयंकरि नमों नमः, सर्वसौभाग्यदायक–कचक्रस्वामिनि नमों नमः, संप्रदाययोगिनि नमों नमः, सर्वसिद्धिप्रदे नमों नमः। सर्वदुःखविमोचनि नमों नमः, सर्वसौभाग्यदायिनि नमों नमः, सवार्थसाधकचक्रस्वामिनि नमों नमः, कुलोत्तीणयोगिनि नमों नमः, सर्वज्ञे नमों नमः, सर्वशक्ते नमों नमः, सैश्विर्यप्रदायिनि नमों नमः, सर्वज्ञानमयि नमों नमः, सर्वव्याधिविनाशिनि नमों नमः, सर्वाधारस्वरूपाय नमो नमः, सर्वपापहरे नमों नमः, सर्वानंदमयि नमों नमः, सर्वरक्षास्वरूपिणि नमों नमः, सर्वेप्सितफलप्रदे नमों नमः, सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि नमों नमः, निगर्भयोगिनि नमः, वशिनि नमों नमः, महावज्रेश्वरि नमों नमः, मोदिनि नमः, सर्वरोगहरचक्र स्वामिनि नमों नमः, रहस्योगिनि नमों नमः, बाणिनि नमों नमः, चापिनि नमों नमः,

पाशिनि नमों नमः, अंकुशिनि नमों नमः, महाकामेश्वरि नमों नमः, महावज्रेश्वरि नमों नमः, महाभगमालिनि नमों नमः, सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनि नमों नमः, अतिरहस्योगिनि नमों नमः, श्री श्रीमहाभट्टारिके नमों नमः, सर्वानंदमयचक्रस्वामिनि नमों नमः, परापररहस्योगिनि नमों नमः, त्रिपुरे नमों नमः, त्रिपुरेशि नमों नमः, त्रिपुरसुंदरि नमों नमः, त्रिपुरवासिनि नमों नमः, त्रिपुराश्री नमों नमः, त्रिपुरमालिनि नमों नमः, त्रिपुरसिद्धे नमों नमः, त्रिपुरांबे नमों नमः, महात्रिपुरसुंदरि नमों नमः, महामहेश्वरि नमों नमः, महामहाराज्ञि नमो नमः, महामहाशक्ते नमों नमः, महामहागुप्ते नमों नमः, महामहाज्ञप्ते नमो नमः, महामहानंदे नमों नमः, महामहास्कंधे नमों नमः, महामहाशये नमों नमः, महामहाश्रीचक्र नगरसामराज्ञि नमों नमः। नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमो नमः।। शक्तो एषा विद्या महासिद्धिदायिनी ग्मृतिमात्रतः।

"धूप चढ़ाना"।। महाराज्ञि राजसेव्ये साजयं गुग्गुल संस्कृतम्। अष्टगन्धयुतं धूपं मया नीतं सुजियताम्। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वतयै यक्षिण्यै श्रीशारिकाभगवत्यै श्री शारदा भगवत्यै, श्री महाराज्ञा भगवतै, श्री ज्वाला भगवतै, व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै गङ्गाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघंण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै कालरात्र्यै, कात्यायन्यै नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्यै दुर्गादेव्यै भवान्यै धूपं परिकल्पयामि नमः।।

"कपूर व रत्नदीप"।। एहि जवाले महाजवाले कर्पूरपीठमण्डितम्। नानावर्ति रतन दीप मया दत्तं प्रकाश्यताम्।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम।

उर्वा रूकम् इव बन्धनात्, मृत्यो मुक्षीय मामृताम।3।

कर्पूर गौरं करूणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारं

सदा रमन्तं हृदयारबिन्दं। भवम भवानी सहितं नमामि।।

सहस्त्र नमिनि दुर्गादेव्यै भवान्यै करपूरम् परिकल्पयामे नमः।

रत्नदीप चढ़ाना : ब्रह्मणोस्य मुखम–आसीत्बाहू राजन्य कृतः। उरु तत–अस्य यत् वैश्यः पद्–भयां शूद्रो–अजायत। तेजोसि शुक्रम–असि जयोतिर–असि धामासि प्रियं देवानाम्–अनादृष्टं देव यजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृहणामि देवेभ्यँस्त्वा यज्ञेभ्यो गृहणामि। भगवति आमाँये, कामाये चार्वङ्ग्यै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गगाभगवत्यै, यमुनाभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गाभगवत्यै, दुर्गादेवीयै ।

रत्नदीपं, धूपं, कर्पूर, परिकल्पयामिः ।

अब भगवति की आरती करें।

1. हेमज़ा सुतं भजं गणेशं ईशनन्दनम्
एक दन्त वक्र तुण्ड नागयज्ञोसूत्रकम्
रक्त गात्र धूम्रनेत्र शकुल वस्त्रमड़ितम्
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजानन्म्

2. पाशापाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणीम्
अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्र कोटिनिर्मलम्
चित्रमाल भक्ति ज़ाल बालचन्द्र शोभितम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजानन्म्

3. विश्ववीर्य विश्वदीर्ध विश्वकर्म निर्मलम्
विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र–तत्र पूजितम्
चतुर्मुखं चर्तुभुजं सेवितं चर्तुयुगम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजानन्म्

4. भूतभव्य हव्यकव्य भव भार्गव वन्दितम्
देव वाह्नि कालज़ाल लोकपाल वन्दितं
पूर्णब्रह्म सूर्य वर्ण पुरुषं पुरान्तकं
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजानन्म्

5. ऋद्धि–बुद्धि अष्टसिद्धि नव निधानदायकम्

यज्ञकर्म सर्वं धर्म वर्ण वर्णरुचितम्
भूतधूम्र दुष्ट मुष्ट दान्वै तर्दाचितं
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजानन्म्

6. हर्ष रूप वर्ष रूप पुरुष रूप वन्दितम
शोर्प कर्ण रक्त वर्ण रक्त चंदन लीपितम
योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टिदायकं
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजानन्म्

7. नमोस्तु ते गणेश्वर्मं नमोंस्तु ते लम्बोदरं
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजानन्म्

ॐ जय नारायण जय पुरुषोत्तम जय वामन कंसारे
उद्धर मामऽसुरेशविनाशिन्पतितोऽहं संसारे।
घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं
मामऽनुकम्पय दीनमऽनाथं कुरु भव–सागरपारं।
घोरं हर......
जय जय देव जयासुरसूदन जय केशव जय विष्णो
जय लक्ष्मी मुखकमलमधुव्रत जय दशकन्धर जिष्णो
घोरं हर......
यद्यपि सकलमऽहं कलयामि हरे नहि किमऽपि स–सत्वमं
ततऽपि न मुञ्चति मामिद्मऽच्युत पुत्र कलत्र ममत्वं।
घोरं हर......

पुनरऽपि जननं पुनरऽपि मरणं पुनरऽपि गर्भनिवासं
सोढुम–ऽलमपुनरऽस्मिन्माधव मामुद्धुर निजदासम्।
घोरं हर......

त्वं जननी जनकः प्रभुरऽच्युत त्वं सुहृतकुलमित्रम्
त्वं शरणं शरणागतवत्सल त्वं भवजलधिवहित्रम्।
घोरं हर......

जनकसुतापति चरणपरायण शंकर मुनिवर गीतं
धारय मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम वारय संसृतिभीतिम्।
घोरं हर......

गौरी स्तुतिः

लीलारब्धस्थापित लुप्ताखिल लोकां
लोकातीतैयोगिभिरन्तर्हृदि मृग्याम्।

बालादिंत्यश्रेणि–समानद्युति पुंजां
गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे।।

आशापाशक्लेशविनाशं विदधानां
पादाम्भोज ध्यानपराणां पुरुषाणाम्।
ईशीमीशागार्धहरां तां तनुमध्यां।। गौरीम०

प्रत्याहारध्यानसमाधिस्थितिभाजां
नित्यं चिते निर्वृतिकाष्ठां कलयन्तीम्।
सत्यज्ञानानन्दमयीं तां तडिदाभां गौरीम०

चन्द्रापीडानन्दिमन्दस्मितवक्त्रां
चन्द्रापीडालङ्कृतलोला लकभाराम् ।
इन्द्रो पेन्द्राभ्यर्चित पादाम्भुजयुग्मां । गौरीम०

नानाकारैः शक्तिकदम्बैर्भुवनानि
वयाप्य स्वैरः क्रीडातियासी स्वयंमेका
कल्याणीं तां कल्पलतामानतिभाजां गौरीम०

मूलाधारादुत्त्थितवन्तीं विधिरन्ध्रं
सौरं चान्द्रं धामविहाय ज़्वलिताङ्गीम् ।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्म तरां तामभिवन्द्या गौरीम०

आदिक्षान्तामक्षरमूर्त्या विलसन्तीं
भूते भूते भूतकदम्बप्रसवित्रीम् ।
शब्द ब्रह्मानन्दमयीं तामभिरामां गौरीम०

यस्या कुक्षौ लीनमखण्डं जगदण्डं
भूयो भूयः प्रादुरभूदक्षतमेव ।
भर्तृा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ विहरन्तीं
गौरीम०

यस्यामेतत्प्रोतमशेषं मणिमाला
सूत्रे यद्वत्कापि चरंचा प्यचरं च
तामधयात्मज्ञानपदव्यां गमनीयां । गौरीम०

नित्या सत्यो निष्कल एको जगदीशः
साक्षी यस्याः सर्ग विधौ संहरणे च।
विश्वत्राण क्रीड़नशीलां शिवपत्नीं

गौरीम०

पूजा काले भावविशुद्धं विदधानो
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः
वाचां सिद्धिं सम्पत्तिमुच्चै शिवभक्तिं
तस्या वश्यं पर्वतपुत्री विदधाति।। गौरीम०

गौरी आरती

ॐ जय जय जय जय जग माता,
शरण तुम्हारे आये है
हंसासण पर बैठी हो माता,
ब्रह्मा–स्वरूप धरायो है
चार वेद भुज चार विराजे,
चार वेद बज गायो है। ओ जय०
गुरुडासन पर बैठी हो माता,
विष्णु–स्वरूप धरायो है।
मौर–मुकुट पीताम्बर साजे,

मुखधर बीन बजायो है। ओं जय०

वृषभासन पर बैठी हो माता,

शंकर–स्वरूप धरायो है।

जटा–झट सिर गंगा विराजे,

वासुक नाग लिपटायो हैं । ओं जय०

सिंहासन पर बैठी हो माता,

शक्ति–स्वरूप धरायो है।

भक्त–जनो की लेकर आरती

चरण–कमल चितरायो है। ओं जय०

सहस्र नामनि दुर्गा देवी भवानी रत्नदीपं, कर्पूरं, धूपं समर्पयामि नमः

—o—

(चामर) एहि व्रीडें वीतव्रीडे

चामरं पिच्छलैर्युतम्।

सुखवातप्रदं सम्यक् दत्तं स्वीक्रियतामिदम्।

"अन्य उपकरण" एहि दुर्गे पराशक्ते भक्तया कंकतिकां शुभाम्। ध्वजं छत्रं व्यञ्जनं च मया नीतं विभूष्याताम्। भगवत्यै, अमायै, कामायै, चार्वङ्ग्यै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, श्री व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनामभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै,

महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्ये दुर्गादेव्यै भवान्यै। उपकरणानि समर्पयामि नमः।। " **आईना**"।। हे वैखरि विश्वमातस्त्वंदृष्ट्याऽदर्शविम्बवत्। भाति विश्वं स्वयं त्वं साऽऽदर्शं दत्तं सुपश्यताम्। भगवत्यै, आमायै, कामायै, चार्वङ्ग्यै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, श्री व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनामभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्ये दुर्गादेव्यै भवान्यै । आदर्शं समर्पयामि नमः। **(पानी से संकल्प)** एताभ्यो देवताभ्यः दीपो नम्ः धूपो नमः। सपरिवारायाः पराशक्तेरर्घ्यदानाद्यर्चनविधिः सर्वः परिपूर्णोऽस्तु। **"मधुपर्क"**। **दूध, दही, घी, शक्कर, शहद किसी पात्र में अपर्ण करते हुये।** हे वितस्ते पापहर्त्रि श्रीराजयमधुशर्करम्। षड्सास्वादितं भक्ष्यं चरुं न्यस्तं सुस्वाद्यताम्। भगवत्यै, आमायै, कामायै, चार्वङ्ग्यै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, श्री व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनामभगवत्यै,

कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रै, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्ये दुर्गादेव्यै भवान्ये। चरूं समर्पयामि नमः । **"फूलों की अञ्जलि"**।। एहि गङ्गे विष्णुपञ्जे विल्वदूर्वाज्जमण्डिताम्। पुष्पाञ्जलिमिमां भक्तया दत्तां नस्यां सुजिघ्र्यताम्। भगवत्यै, आमायै, कामायै, चार्वङ्ग्यै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, श्री व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनामभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रै, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्यै दुर्गादेव्यै भवान्यै। पुष्पाञ्जलि समर्पयामि नमः। **फल (नाना प्रकार के फल जिसमें, अंगूर, अन्नार, सेब, और खजूर भी हो चढ़ाते हुए)** यमुने त्वं यमस्व सुर्भव्य खजूर दाडिमम्। द्राक्षारुकाम्बरम्भादि फलं प्रत्तं सुभक्ष्यताम्।। भगवत्यै, अमायै, कामायै, चार्वङ्ग्यै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, श्री व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनाभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै,

ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रै, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्ये दुर्गादेव्यै भवान्ये। फलं समपर्ययामि नमः।। **"ताम्बूल"।। (एक पान पत्ते पर शहद, लाल चन्दन, इलाईची, सुपारी इति रखकर चढाये)** कालिके त्वं कोकिलाभे पूगताम्बूलपानकम्। मुखभागन्धदं दत्तं प्रीतया श्वासं सुगन्धयताम्। भगवत्यै, अमायै, कामायै, चार्वङ्ग्यै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, श्री व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनाभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रै, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्ये दुर्गादेव्यै भवान्यै ताम्बूल समर्पयामि नमः।। **"एक प्रक्रम मन से देना"**।। सिद्धलक्ष्मीः विष्णुपत्नि ज्ञाताज्ञातकृतानि मे दशधैनासि दह्यन्तां प्रक्रमैकविधानतः। ॐ नमो भगवत्यै भगवति प्रसीद।

लक्ष्मी राजकुले जयां रणभुवि क्षेमङ्करीम् अध्वनि।
क्रव्याद द्विपसर्प भाजि शवरीं कान्तार दूर्गे गिरौ।
भूत–प्रेत–पिशाच–जम्बुक–भये, स्मृत्वा महा भैरवीं।
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोय प्लवे।

प्रातः काले कुमारी कुमुद कलिकया जप्यमालां जपन्ती।
मध्याह्ने प्रौडरूपा विकसित वदना चारूनेत्रा विशाला।
सन्ध्यायां वृद्धरूपा गलित कुचयुगे मुण्डमाला वहन्ती।
सा देवी दिव्यदेहा हरिहर नमिता पातु नो ह्यादिमुद्रा।
संसारा र्णवतारिणीं रविशशि कोटि प्रभां सुप्रभां।
पापा तंकनिवारिणीं हरिहर ब्रह्मादिभिः सुंस्तुताम।
दरिद्रस्य विनाशिनीं सुकृतिनां जाड्यं हरन्तीं भृशम्
ज्ञानान्धमतेः कवित्व जननीं ज्वाला भुखीं नौम्यहम्।।

भक्तानां सिद्धिदात्री नलिनयुग करा श्वेतपदमा सनस्था।
लक्ष्मीरूपा त्रिनेत्रा हिमकरवदना सर्व दैत्येन्द्रहर्त्री।
वागीशी सिद्धिकर्त्री सकलमुनि जनैः सेविता या भवानी,
नौम्यहं नौम्यहं त्वां हरिहर प्रणता शारिका नौमि नौमि।

मार्तनमामि कमले कमलायताक्षि श्री विष्णु हृत्कमल वासिनि विश्वमातः।

क्षीरोदजे कमलको–मलगर्भ गौरि लक्षिम प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।

उत्तप्त हेम रुचिरे त्रिपुरे पुनीहि।

चेत–शिचरन्तनं–अघौघवनं लुनीहि, कारागृहे निगड–बन्धनं–पीडितस्य, त्वत् संस्मृतौ झट् इति मे निगडा स्त्रटयन्तु।।

"स्तोत्रपाठादि पढ़कर अष्टाङ्गगप्रणाम देना"।।

महालक्ष्मी मारमातर्भुक्तिमुक्तिफलप्रदम्। भक्तया कृतं प्रणामं ते साष्टाङ्गं स्वीविधीयताम्। उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यामुरसा शिरसा मनसा वचसा च नमस्कारं करोमि नमः।। **(पानी से संकल्प)**। अन्न नमः 2 आज्यमाज्यमऽद्यदिनेऽद्ययथासङ्गपात् सिद्धरस्तु। अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं च यद्गतं तत्सर्वमऽच्छिन्द्रं सम्पूर्णमस्तु एवमस्तु। **(अपोशान डालना)** शनोदिवीराभष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभि स्रवन्तु नः। भगवत्यै, अमायै, कामांये, चार्वङ्गचै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, श्री व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गगाभगवत्यै, यमुनाभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रै, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्ये दुर्गादेव्यै भवान्ये।। अपोशानं नमः, आचमन्यं नमः। शन्नोदेवीरभेष्ट्य आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभि स्रवन्तु नः करके दक्षिणा डालना, दक्षिणायै तिलहिरण्यरजतनिष्कर्य

ददानि।। एता देवताः सदक्षिणाऽन्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।।
"नैवेद्यः"।। अमृतेशमुद्रयाऽमृतीकृत्य अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्।। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्तम्यामददे।। भगवत्यै, आमायै, कामायै, चार्वङ्ग्यै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, श्री व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनामभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्डयै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रै, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै, नवदुर्गाभगवत्यै सहस्रनाम्न्ये दुर्गादेव्यै भवान्यै। ओंम नमों नैवेधं नवेदयामि नमः।।

योगिनी बलि (चटू) :– आकाशमातृभ्यो बलिं नमः, समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्प नमः

देवी को :– दुर्गा भगवत्यै फलादि समर्पयामि नमः

क्षेत्रपाल को :– क्षां क्षेत्राधितये नमः, रां राष्टाधिपतये नमः। सर्वाभयवर प्रद मयि पुष्टिं पुष्टि पति ददातु।।

आनन्द सुन्दर पुरन्दर–मुक्त मालयं।
मौ लौ हठेन निहितं महिषा सुरस्य
पादाम्बुजं भवतु में विजयाय मञ्जू।
मञ्जीर–शिञजत–मनोहरम् अम्बिकायाः।।

सौन्दर्य–विभ्रम–भुवो भुवनाधि पतय।
सम्पति कल्प्रतरव स्त्रिपुरे जयन्ति।
एते कवित्व कुमुद प्रकराव बोध।
पुर्णेन्दव स्तवयि जंगत् जननि प्रणामाः।।

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरि चन्द्र सहस्र रश्मि,
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै,
वागीश्वरी! त्रिभुवनेश्वरि! विश्वमातः
अन्त्बर्हिश्च कृतं संस्थितये नमस्ते।।

ये देवि! दुर्धर–कृतान्त–मुखन्तरस्था
ये कालि! कालघन्–पाश–नितान्त बद्धाः
ये चण्डि! चण्ड–गुरु–कल्मष–सिन्धुमग्ना
स्तान् पासि मोचयसि तारयसि–स्मृतैव।।

"स्तोत्रादि पढ़कर" अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे। का परा सहते देवि केवलं स्वामिनं विना।। यद्दत्तं भत्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम्।। निवेदितं च नैवेद्यं तदृहाणानुकम्पया।। आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्।। पूजाभागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।। उभाभ्याम, जानुभ्याम, पानिभ्याम, शरसा, उरसा, मनसा च अष्टांङ्ग प्रणामं करोमिनमः।। **"तर्पण"** नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः

पृथिव्यै नम औषधीभ्यः।। नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे वृहते कृणोमि। इत्येतासामेव देवतानां सलोकतां सायुज्यं सार्ष्टि सामीप्यमाप्नोति य एवं विद्वान् स्वाध्यायमधीते।। **"माफी की प्रार्थना"** स्वच्छस्वान्तेन ते भक्तया महात्रिपुरसुन्दरि। यथाभावं कृतां पूजां स्वीकृत्य विश स्वाश्रयम्।। मनस्यन्तर्गतं मन्त्रं, मन्त्रस्यान्तर्गतं मनः। मनोमन्त्रमयं दिव्यमेकपुष्पं पराऽर्चनम्।। इति दुर्गापूजा–सम्पूर्णा।।

नवरात्रों में प्रातः दुर्गा पूजा के पश्चात दुर्गासप्तशती का नियमित पाठ करना आवश्यक है। पूरा पाठ न कर सकने पर खण्डशः पाठ करें।

लघु

श्री दुर्गासप्तशती का खण्डशः पाठ

(1) विशेष रूप से संस्कृत नहीं जाननेवालों के लिए सभी अंगों के साथ पूरा पाठ समय–सापेक्ष हो जाता है। अतः इसके विभिन्न प्रकार के पाठ की रूपरेखा उपलब्ध है। दुर्गासप्तशती के गुप्तवती टीकाकार ने एक पक्ष का उल्लेख किया है। एक दिन में एक चरित का पाठ कर तीन दिनों में एक आवृत्ति पाठ करें। इस पद्धति से प्रत्येक दिन आध्यायों की संख्या इस प्रकार होगी।

प्रथम दिन	:	प्रथम अध्याय
द्वितीय दिन	:	द्वितीय से चतुर्थ अध्याय
तृतीय दिन	:	पंचम से त्रयोदश अध्याय

प्रत्येक दिन सप्तशती के अंगों का पाठ समान रूप से होगा।

इसी प्रकार सप्ताह पारायण का भी विधान किया गया है। इस पाठ में क्रमशः 1, 2, 1, 4, 2, 1, 2 अध्याय प्रति दिन होगें।

प्रथम दिन	प्रथम अध्याय
द्वितीय दिन	द्वितीय एवं तृतीय अध्याय
तृतीय दिन	चतुर्थ अध्याय
चतुर्थ दिन	पंचम से अष्टम अध्याय
पंचम दिन	नवम एवं दशम अध्याय
षष्ठ दिन	एकादश अध्याय
सप्तम दिन	द्वादश एवं त्रयोदश अध्याय

नवरात्र में तीन दिन में एक आवृत्ति का कल्प (उपर पहला) उपयुक्त है, क्योंकि इससे एक नवरात्र में तीन आवृत्ति हो जाती हैं।

विषेश ध्यान :

दुर्गा सप्तशती के अंगों का पाठ करना आवश्यक माना गया है। जैसे आत्मा अंगहीन होकर किसी भी कार्य में सक्षम नहीं होती, उसी प्रकार छः अंगों से विहीन दुर्गासप्तशती पाठ की स्थिति होती है।

अंगहीनों यथा देही सर्वकर्मसु न क्षमः।
अंगवटकविहीना तु तथा सप्तशतीस्तुतिः

दुर्गासप्तशती के छः अंगः

कात्यायनी तन्त्र में अर्गला, कीलक, कवच, प्राधानिक रहस्य, मूर्ति–रहस्य एवं वैकृतिक–रहस्य इन छह स्तुतियों को सप्तशती का अंग माना गया है।

कञ्जक पूजन विधिः

नवदुर्गा पूजा में कंजक (कुमारी) प्रत्यक्ष देवी मानी गयी है अतः भोजन, वस्त्र, आभूषण आदि से कंजक पूजा प्राचीन काल से की जाती रही है। यहां इस पूजन का शास्त्रीय–विधान संक्षेप में दिया जा रहा है।

कंजक की उम्र, नाम, पूजा का फल एवं मन्त्र इस प्रकार हैं।

आयू	**नाम**	**पूजा का फल**	**मन्त्र**
2 वर्ष	कुमारिका	दुख, दरिद्रता, शत्रु का नाश धन, आयु बल की वृद्धि	कुमारिकायै नमः।
3 वर्ष	त्रिमूर्ति	आयु, स्वंग, धन–धान्य पुत्र–पौत्रादि	त्रिमूर्तियै नमः
4 वर्ष	कल्याणी	विद्या प्राप्ति, विजय, राज्य–लाभ, यशोलाभ	कल्याण्यै नमः
5 वर्ष	रोहिणी	रोगनाश	रोहिण्यै नमः
6 वर्ष	कालिका	शत्रु नाश	कालिकायै नमः
7 वर्ष	चण्डिका	ऐश्वर्य, धर्म	चण्डिकायै नमः

8 वर्ष	शाम्भवी	राज–सम्मोहन, दुःख दारिद्रय नाश, युद्ध में विजय, क्रूर शुत्र का नाश, अभिचार कर्म में सिद्धि	शाम्भव्यै नमः
9 वर्ष	दुर्गा	स्वर्ग लोक का सुख	दुर्गायै नमः
10 वर्ष	सुभद्रा	मनोरथ की प्राप्ति	सुभद्रायै नमः

(2 वर्ष से कम और 10 वर्ष से अधिक आयू की कंजक पूजा योग्य नहीं होती)

पूजाः प्रत्येक कन्या को स्पर्श करते हुए बोलें "ओं क्लीं कुलकुमारिकायै नमः"

मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणांरूपधरिणीम।

नवदुर्गात्मिकां साक्षात कन्यामावाहयाम्यहम्।

पाद जल से साफ करनाः ओं क्लीं कुलकुमारिकायै नमः पाद्यं समर्पयामि

हाथ मुहं धुलाना : ओं क्लीं कुलकुमारिकायै नमः अर्घ्यं समर्पयामि नमः

आचमन करानाः थोडा सा जल हाथ में देकर आचमन कराना "ओं क्लीं कुमारिकायै आचमनीयं समर्पयामि नमः

वस्त्र : ओं क्लीं कुमारिकायै वस्त्रं समर्पयामि नमः

गंध (तिलक) : ओं क्लीं कुमारिकायै समालबनम–गन्धो नमः

पुष्प अक्षत्: फूल चढ़ाते हुये "ओं क्लीं कुल–कुमारिकायै अर्घो नमः, पुष्प नमः

भूषण आदिः ओं क्लीं कुमारिकायै भूषणानि समर्पयामि नमः

दौनों हाथ जोडकर अर्चना करें:

ओं क्लीं कौमार्यै नमः, ओं कल्याण्यै नमः

ओं कामिन्यै नमः, ओं शाङ्कर्यै नमः, ओं सुमद्रायै नमः, ओं त्रिपुरायै नमः, ओं रोहिण्यै नमः, ओ चण्डिकायै नमः, ओ दुर्गायै नमः

धूप चढ़ानाः ओं क्लीं कुलकुमारिकायै धुपं आघ्रापयामि नमः

रत्नद्वीप : ओ क्लीं कुलकुमारिकायै दीपं दर्शयामि नमः

नैवेद्ध अर्पण करनाः ओं क्लीं कुलकुमारिकायै नैवेद्यं निवेदयामि नमः

नैवेद्य (क्षीर, हल्वा इति) गृहण करवाने के पश्चात् फिर आचमन करवाले।

"ओं क्लीं कुलकुमारिकायै अपोशानं नमः, आचमनीयं नमः

दक्षिणाः दक्षिणा चढाते हुये " ओं क्लीं कुलकुमारिकायै दक्षणाये तिल रजत निषकर्णम ददामि।

हाथ जोडकर अर्चणाः

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।

महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनी।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवी नमोऽस्तुते।।

प्रार्थना सर्मपयामि

नव दुर्गा भगवती का विसर्जनः

देवी की धूप—दीप से पूजा (आरती) करलें उसके पश्चात पढेंः (हाथ में चावल सहित दो ध्रुव काण्ड लें)

उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य।

कुरुष्व मे हि कल्याणं अष्टभिः शक्तिभिः सह।।

दुर्गेलक्ष्मी च वाग्देवि स्वस्थानं गच्छ पूजिते।

संवत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै।।

इमां पूजां मया देवी यथाशक्ति उपपादिताम्।

रक्षार्थं त्वं समादाय व्रजस्व स्थानमुत्तमम।।

श्री दुर्गा लक्ष्मीं सरस्वती यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि शोभनार्येक्षेमाय पुनरागमनाय च

(नमस कारान् समर्पयामि)

जानुभ्याम, पानिभ्याम इति... अष्ठांग प्रणामं करोमि

श्री अम्बाजीकी आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी ।

तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री ।।1।। जय अम्बे०

माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।

उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको ।।2।। जय अम्बे०

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।

रक्त–पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै ।।3।। जय अम्बे०

केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।

सुन–नर–मुनि–जन सेवत, तिनके दुखहारी ।।4।। जय अम्बे०

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।

कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योति ।।5।। जय अम्बे०

शुम्भ निशुम्भ, विदारे, महिषासुर–घाती।

धुम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ।।6।। जय अम्बे०

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।

मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ।।7।। जय अम्बे०

ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी।

आगम–निगम–बखानी, तुम शिव पटरानी ||8|| जय अम्बै०

चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरुँ।

बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू ||9|| जय अम्बै०

तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।

भक्तनकी दुख हरता सुख सम्पति करता ||10|| जय अम्बै०

भुजा चार अति शोभित, वर–मुद्रा धारी।

मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर–नारी ||11|| जय अम्बै०

कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।

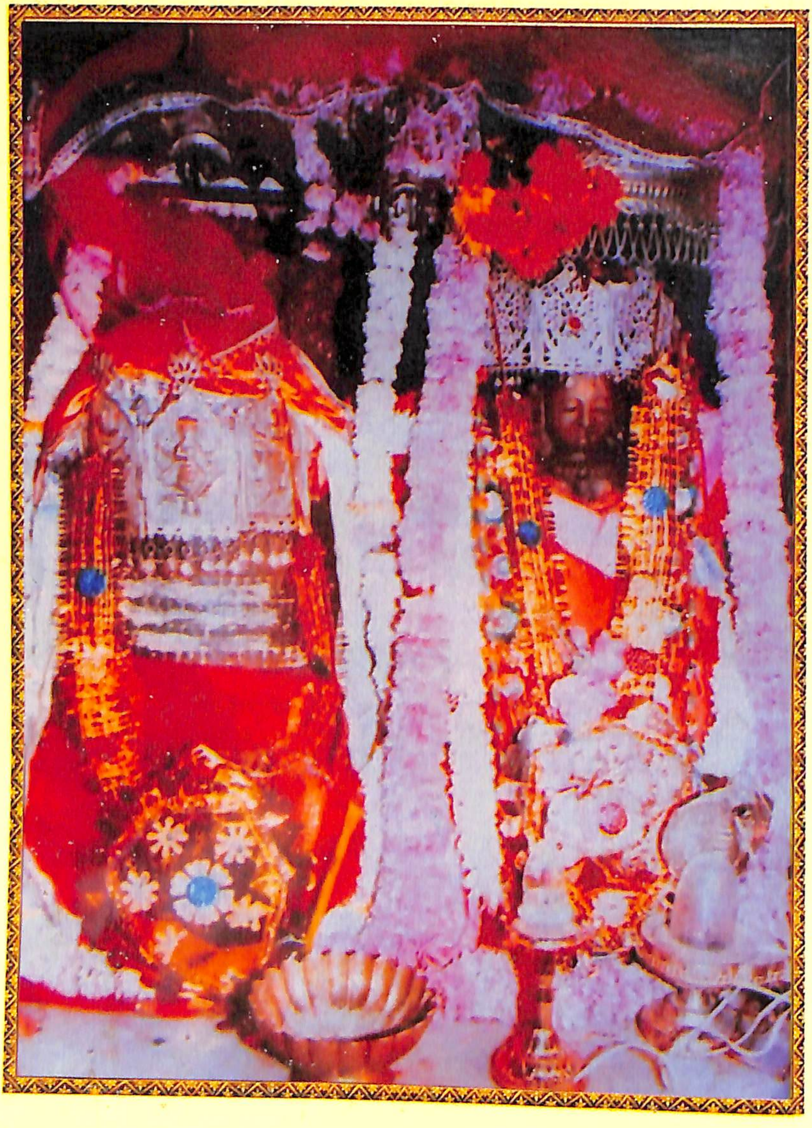
(श्री) मालकेतुमें राजत कोटिरंतन ज्योति ||12|| जय अम्बै०

(श्री) अम्बेजीकी आरति जो कोइ नर गावै।

कहत शिवानँद स्वामी, सुख सम्पति पावै ||13|| जय अम्बै०

नवदुर्गा लीला

ांसि वननस रूदुम नय वारय नव दुर्गा करि सोन चारय ।।
लगिमित छिय चॅनिस ज़प सय, सिद्धि करतय म्यानिस तपसय
प्रथ कारस माज्य दितम तारय ।। नव दुर्गा०
शैलपुत्री कनथव नादन, प्राण वन्दय चान्यन पादन
कन थावतम बोज़ ज़ार पारय ।। नव दुर्गा०
हचार्णी ब्रह्मनिश रछतम, सनमुख म्य दर्शुन हावतम
ातय त्रावतम यमि संसारय ।। नव दुर्गा०
न्द्रघण्टी कास्तम खेरी, लोल मन सऽत करहय ज़ारी
ायूठ संसार क्रूठ व्यवहारय ।। नव दुर्गा०
ुषमाण्डी लगहय नावस, अर्पन छुसय चयानिस नावस
ुकलाव तम नरकन्य नारय ।। नव दुर्गा०
सकन्दमात्री शरण बय आसय, काम क्रोध लोभ अन्दकार कासतम
ाव चानि सीऽत नावि लग्म तारय ।। नव दुर्गा०
कात्याँयनी मुशकिलन करूम हल, अहंकारन रोटमुत छुनस तल
चाऽर् करतम बहय गछय मारय ।। नव दुर्गा०
कालरात्री कालभय कासतम, परि पूरण मनस मंज़ म्य बासतम
ाश हावतम मंज़ अन्धकारस ।। नव दुर्गा०
महागौरी शरण बय आसय, पाप म्यानी माता च़य कासतय
मोकलावतम नरकनि नारय ।। नव दुर्गा०
सिधि दात्री सिधी म्य करतम, यनह गछननिश माज्य मोकलावतम
ॲस सारी करान छिय ज़ार पारय ।। नव दुर्गा०
दास वुलमुत छुनस चॉनी गमनय, पोशि चमनय छुस सगनावान
मनस मंज़ मुशकिन धारय ।। नव दुर्गा०
कांसि नय रोट म्योनुय बारय। ।। नव दुर्गा०
कांसि वननस रूदुम नय वारय ।। नव दुर्गा०



महा राज्ञा एवं भूतेश्वर महादेव

Durga Printing Press : Old Janipur, Jammu. Mob : 9419795385, 94191 41425